में चिंता ऊई, कि राजा किस कारन महल में नहीं आता, और जुदे मंदिर में रहता है, इस का क्या सबब है यह मालूम किया चाहिये. यों रानियां आपस में मता ठान, राजा की खोज लेने को तैयार ऊईं, और उन में से चार रानियां आपस में बिचार करके कहने लगीं, हमारा जीना भी धिरकार है, और जग भी हमारा धिरकार है, कि राजा हमें छोड़ वहां बैठ रहा है, और हम यहां बिरह से दुख पाती हैं; इतने दिनों तो हम ने दुख भरा, पर अब एक छिन भर भी बिन प्रीतम नहीं रहा जाता * यों बिचार कर रात को सवार हो जिस मंदिर में राजा बैठा कौतुक देख रहा था ये भी वहां जा पऊंचीं. हाथ जोड़, बिनती कर, कहने लगीं, कि महाराज! हम से क्या अपराध ऊआ है, जो आप हमारी सुरत बिसार यहां बैठ रहे हैं? यह सुन राजा हंसकर बोला, सुनो सुन्दरियो! तुम्हें किस ने सताया, और किस कारन तुम यहां आईं, क्या तुम्हें किसी ने कुछ कहा है, कि तुम्हारा मुख मलीन हो रहा है? राजा की यह बात सुन सिर निऊड़ा के, उन्हों ने कहा स्वामी! जो बात है, सो आप के सनमुख हम प्रकाश करती हैं. राजा ने कहा अच्छा, कहो तब उन में से एक रानी जो चतुरी थी, सो बोली महाराज! हम अबला हैं, और कभी कुछ नहीं देखा, सुख ही में उमर गंवाई, अब बिरह में काम निस दिन हमें दहे है, सो यह दुख हम तुम्हारे सिवा किस से कहें. इस बिथा से हमें बचाओ, और आप ने हम से बचन किया था, कि हम तुम्हें पीठ न देंगे, सो इतनी मुद्दत से तुम ने बिसार दिया, इतने दिनों तलक जिस तरह ऊआ,

हम ने वियोग भरा, अब हम में बल नहीं * इसी तरह की बातें करते हुए सुबह हो गई. और वे सब मूरतें फिर नक़्श दर औ दीवार हो गईं, तब रानियों ने कहा कि महाराज! जब से तुम ने मंदिर छोड़ा है दुख से यही दशा सब रनवास की हो रही है, और उन रानियों का पाप आप को लगता है, क्योंकि सब आप ही के आसरे में हैं. सुन२ ये बातें राजा हंस कर बोला, कि अब जी में तुम प्रसन्न हो, जो तुम कहो सो हम करें, और जो मांगो सो हम दें, रानियां ख़ुश होकर बोलीं महाराज! हमारे मांगने से जो आप दें, तो हम मांगें. राजा ने कहा जो मांगोगी सो हम देंगे. रानियों ने कहा यह जो खड़िया आप के हाथ में है हमें दो. सुनते ही राजा ने आनंद से हवाले की, रानियों ने लेली और छिपा रक्खी, फिर सवार हो२ अपने२ महल में आईं, और राजा भी आकर दाख़िल हुआ, अपना राज काज करने लगा" * इतनी कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि, "सुन राजा भोज! ऐसा पदारथ देते राजा ने बिलंब न किया और ऐसी विद्या तू कहां पावेगा और जो पावेगा तो तुझ से दी नहीं जायगी. इस से इस आसन के बैठने का तू दअ़वा छोड़ दे, मैं तुझ से सच कहती हूं, तू बौरा न जा, और इस जोग तू नहीं." वुह भी साअ़त गुज़र गई. राजा उठकर वहां से महल में दाख़िल हुआ. तमाम रात सोच में गुज़रगई. सुबह को उठ स्नान, पूजा, से फ़राग़त कर, फिर उसी मकान में आया, सिंहासन के पास खड़ा हो चाहे कि पांव उठा कर धरे इस में *

* तारा उन्नीसवीं पुतली *

खिलखिला कर हंसी और कहने लगी कि "ऐ राजा! अभागी, बावले! पहले मेरी बात सुन, पीछे और बिचारकर, जो तू इस सिंहासन पर चरन रक्खेगा तो अपराधी होगा, मुझ पर पांव दिया था राजा बिक्रमाजीत ने, तू ने अपने जी में क्या बिचारा है? जो यह इरादः करके आया है, मेरा हृदय जो है कंवल है, और मधुकर बीरबिक्रमाजीत था, तू गोबर का कीड़ा, मुझ पर पांव किस तरह रक्खेगा?" राजा बोला, "सुन बाला! तू ने मुझे गोबर का जीवक्योंकर जाना?" पुतली बोली सुन राजा! एक दिन की कथा है कि एक बिराह्मन, सामुद्रिक नाम, सामुद्रिक पढ़ा हुआ थी, बन में चला जाता था, उस के बराबर दुनया में कोई और पंडित न था, अनेक२ भेद बिद्या के जानता था, उस ने दरयाफ़त किया, कि इस रस्ते कोई आदमी गया है, जब उस के निशान पांव के देखे, तो उस में ऊर्द्ध रेखा, और कंवल का चिन्ह नज़र आया. तब उस ने अपने जी में बिचारा कि कोई राजा नंगे पांव इस राह से गुज़रा है, उस को देखा चाहिये, कि कहां गया है? यह बिचार कर उन पाओं के निशान देखता हुआ जब कोस भर पर जा पहुंचा, तो उस बन में देखा, कि एक आदमी दरख़्त से लकड़ियां तोड़कर गट्ठड़ बांध रहा है. बिराह्मन उस के पास जाकर खड़ा हुआ, और पूछा कि तू यहां इस बन में कब से आया है? वुह बोला कि महाराज! मैं दो घड़ी रात रहे से आया हूं, तब

बिराह्मन ने पूछा कि तू ने किसी को इस राह से जाते देखा है कि नहीं? उसने कहा, कि मैं जिस समें से आया हूं, इस बन में मनुष्य का तो जिक्र क्या है, कोई पंछी भी नज़र नहीं आया. फिर उस बिराह्मन ने कहा, देखूं तेरा पांव, पांव उस ने आगे रख दिया, और बिराह्मन ने सब चिन्ह देखे. देख कर अपने जी में सोचने लगा, कि यह सबब क्या है कि सब लछन इस में राजा के हैं, और यह इतना दुखी क्यों है? फिर इसे पूछा कि कितने दिनों से तू यह काम करता है? उस ने कहा जब से मैं ने होश संभाला है, तब से यही उद्यम कर के खाता हूं, और राजा बीरबिक्रमाजीत के नगर में रहता हूं * बिराह्मन ने पूछा तू बहुत दुख पाता है? वुह बोला महाराज! यह भगवान की इच्छा है कि किसी को हाथी पर चढ़ावे, और किसी को पैदल फिरावे, किसी को धन, दौलत, बिन मांगे दे, और किसी को भीख मांगे टुकड़ा भी न मिले, कोई सुख में चैन करता है, कोई दुख में बौरा रहा है, भगवान की गति नहीं जानी जाती कौन रूप किस में रचा है, और जो करम में लिख दिया है सो मनुष्य को भुगतना होता है; दुख, सुख, उस के हाथ है, इस में किसी का कुछ ज़ोर नहीं चलता * उस से ये बातें सुन और वुह चिन्ह देख बिराह्मन ने अपने जी में अचरज माना, कहा कि मैं ने बड़ी मिहनत से बिद्या पढ़ी थी, सो मेरा श्रम वृथा गया, और सामुद्रिक में जो बिध लिखी है पुरुष के लछन देखने की, सो झूठ ठहरी, और यह उम्र हम ने अपनी बे फ़ायदः गंवाई. यह कह मन में मलीन हो, बिचार करता राजा के निकट चला, कि जाकर उस का भी

पांव देखूं, कि उस में भी निशान है या नहीं, और जो लछन पोथी प्रमान न मिलेगा तो सब पोथियां फाड़, जला, सन्यासी हो तीर्थ यात्रा को चला जाऊंगा, फिर संसार से कुछ अर्थ न रक्खूंगा, क्योंकि, इतनी मुद्दत की मिहनत झूठ कर्म के पीछे गंवाई तो आगे संसार में क्या फल मिलेगा? उस से भगवत भजन करना अच्छा है इसलिये कि स्वारथ न हो तो परमारथ तो होगा * यों बिचार करता राजा के पास जा पहुंचा, राजा को आशीस दी, राजा ने दंडवत कर कहा बिराह्मन देवता! तुम इतने मन मलीन क्यों हो, क्या दुख मन में तुम्हारे उपजा है? मुझ से कहो, बिराह्मन ने कहा राजा! तू पहिले अपना चरन मुझे दिखला जो मेरे चित का संदेह जाय. राजा ने अपना पांव दिखलाया, और उसने कुछ लछन उस में न पाया * यह देख सीस निवाय चुप हो रहा, और अपने जी में कहने लगा, कि अब पोथियां सब जला, संसार को त्याग, बैराग ले, देस२ फिरिये. यह तो अपने जी में बिचार कर रहा था, राजा ने कहा पंडित! तू क्या क्रोध कर, सिर डुलाय, पछताय, चुप हो रहा है, अपने मन की बात मुझ से कह, कि तू ने अपने मन में क्या ठानी है? बिराह्मन बोला सुनो महाराज! मेरे पास सामुद्रिक की पोथी है, बारह बरस मैं ने पढ़ कर याद की है, सो मिहनत मेरी निर्फल गई, इसवास्ते संसार से मेरा जी उदास हुआ है. राजा ने हंसकर कहा कि यह तुम ने प्रतच्छ क्यों कर देखा? वुह बोला महाराज! मैं ने बड़ा दुखी देखा, कि उसके पांव में ऊर्द्ध रेखा और कंवल था, और उसकी रोज़ी यह थी, कि लकड़ी बन से लाता था, और बेच

कर खाता था, वुह देखकर मैं ने तेरा जो पांव देखा तो कोई अच्छा लछन न पाया, और तू राज सारे नगर का करता है. इस से मेरे जी को क्रोध हुआ है, ग्रंथ जला, देस त्याग करूंगा * राजा ने कहा, बिराह्मन! सुन मैं तुझे बुझाकर कहता हूं, और ग्रंथ साधकर तुझे दिखलाता हूं, तब तेरा जी पतियावेगा, किसी के लछन गुप्त होते हैं, और किसी के प्रगट. बिराह्मन ने कहा मैं किस तरह से जानूं, राजा ने छुरी मंगवा तलुए की खाल चीर, लछन दिखला दिये. बिराह्मन ने देखा कि कंवल और ऊर्द्धरेखा है, देखकर उसके जी को संतोष हुआ, कहा कि ऐ बिप्र! ऐसी बिद्या पढ़ी हुई किस काम आती है, कि जिस के सब भेद्र मअ़लूम न हों? इस तरह के लछन देख बिराह्मन अवाक हुआ; फिर राजा को आसीस दे अपने घर को गया" * इतना क़िस्सा कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज! "अब इस योग तू हुआ जो सिंहासन पर बैठने की इच्छा करता है, और जो इतना साहस करे सो इस सिंहासन पर बैठे, नेम, धर्म्म, जस, आदमी के जाने से नहीं जाता, जैसा फूल नहीं रहता, और उसकी सुगंध अ़तर में रहजाती है" * यह सुन कर राजा को कुछ चेत हुआ, कहने लगा कि यह संसार थिर नहीं, जैसी तरवर की छांह है, वैसी ही दुनिया की गति है; जिस तरह चांद, सूरज, आते जाते हैं, उसी तरह मनुष्य का जीना, मरना है; जैसे कोई सपने में कौतुक देखता है, वैसा ही जग का रूप नज़र आता है, और मनुष्य देह धरके अनेक२ दुख भोग करे है; पर सुख यह है जो हरि भजन हो * इतना ज्ञान राजा अपने जी में बिचार, वहां से उठ, अपने

मंदिर में गया, रात जों तों काटी, प्रभात होते ही फिर वहां आन मौजूद हुआ, पुतलियों से पूछा कि अब मैं क्या करूं तुम मुझ से कहो तब *

* चंद्रजोति बीसवीं पुतली बोली *

"महाराज! मैं समझा कर कथा आप के आगे कहती हूं, एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत ने खुश होकर, रास मंडली के प्रधान को आज्ञा दी; यह कातिक महीना धर्म महीना है, इस में कुछ हरि का भजन मन लगाकर किया चाहिये, सरद पूनों को ठाकुर की रास लीला करो. प्रधान ने राजा की आज्ञा पाय, देस२ के राजा और पंडितों को न्योते भेज बुलाया, और जितने नगर के जोगी थे उन को भी खबर दे तलब किया, और जितने देवता थे उन को भी मंत्रों से आवाहन कर के बिठलाया. रास होने लगा चारों ओर से जै२ कार शब्द होने लगा, और राजा एक२ का शिष्टाचार मनुहार कर२ फूलमाल ठाकुर की प्रसादी देने लगा; देखा राजा ने, सब देवता आये, पर चंद्रमा नहीं आये, यह अपने जी में बिचार, बैताल पर सवार हो चंद्र लोक को गया; वहां जा सनमुख हो, दंडवत की, और हाथ जोड़ कर कहा, स्वामी! मेरा क्या अपराध है, जो आपने कृपा नकी और सबने मेरे भाग पर कृपा की है, तुम्हारे बिन मेरा काम अधूरा है, अब बिजै कीजिये, और काम मेरा सुधारिये. आप को धर्म होगा, मुझे संसार में जस मिलेगा, जो

कदाचित आप इस में बिलंब कीजियेगा, तो मैं हत्या दूंगा. तब चंद्रमा ने हंस कर कोमल, मधुर बचन, से कहा, राजा! मैं तुझ से सत्य कर कहता हूं, तू अपने जी में उदास न हो, मेरे जाने से संसार में अंधकार हो जायगा, इस लिये मेरा जाना नहीं बनता, तुझे अभिलाषा थी मेरे दर्शन की सो तेरी इच्छा पूजी, तेरा काम सुफल होगा, तू अपने नगर में जा, जो काम तू ने आरंभ किया है, सो पूरन कर * इस तरह से राजा को समझा अम्रत दे बिदा किया, राजा ने सिर चढ़ा लेलिया और दंडवत कर अपने नगर को चला. रस्ते में देखा कि जम के दो दूत एक बिराह्मन का प्रान लिये जाते हैं, राजा ने यह देव दृष्टि से जाना, और उस बिराह्मन के भी प्रान ने राजा को देख दूर से कहा कि इस राजा से भेंट है; राजा ने उस बिराह्मन की आवाज़ सुन कर कहा कि भाई! तुम कौन हो? तब उन दोनों ने समझा कर राजा से कहा, कि हम जम के भेजे उज्जैन नगरी गये थे, बिराह्मन का जी लिये अपने स्वामी के पास जाते हैं; राजा ने उन से कहा, पहिले इस बिराह्मन को तुम हमें दिखा दो पीछे अपने काम को जाओ, वे दूत राजा को साथ ले नगर में गये जहां उस बिराह्मन की देह पड़ी थी, वहां दिखाया; राजा देखते ही उस बिराह्मन को सिर निछड़ा अपने जी में कहने लगा, कि यह तो हमारा ही पुरोहित है, राजा ने दूतों को बातों में लगा, नज़र बचा, वुह अम्रत उस के मुंह में डाल दिया; बिराह्मन राम का नाम ले उठ खड़ा हुवा, राजा ने प्रनाम किया, बिराह्मन ने आसीस दी, दूतों ने हाथ जोड़, बिनती कर कहा, यह जी हाथ में ने तुम से

पाया: यह देख कर दूतों ने अपने जी में अचंभा किया, कि यह राजा ने क्या किया, हम जा कर क्या जवाब देंगे? यह बिचार करते ऊए दूतों ने जम के पास जा सब राह की अवस्था कही * जम सुन कर चुप हो रहा, और राजा बिराह्मन का हाथ पकड़ अपने मंदिर को लाया, बऊत सा दान दे बिदा किया." यह कथा कह पुतली बोली कि, "ऐ राजा भोज! ऐसा पुरुषारथ कर सके तो इस आसन पर बैठ, नहीं तो इस ख़ियाल से दरगुज़र." इस तरह वह भी खम्र टल गई. राजा उठ वहां से अपने मंदिर में आया; रात जिस तिस तरह से काटी, सुबह होते ही तैयार हो फिर सिंहासन के पास जा खड़ा ऊआ, चाहे कि पांव धरे *

'* तब अनुरोधवती इक्कीसवीं पुतली *

बोली "राजा! क्या तू अपनी बड़ाई करता है, और इस अनीत की कौन सी बड़ाई है? पहले मुझ से बात सुन ले, पीछे इस पर बैठ. माधो नाम एक बिराह्मन था, बड़ा गुनी, उस की तअ़रीफ़ हो नहीं सकती जो मैं कहूं, जोगी होकर वह तमाम पृथवी में फिर आया, कहीं ठहर कर रहने न पाया. मानो काम का औतार था, स्त्री देखते ही उसे मोहित हो जाती थी: ऐ राजा! वह सब बिद्या पढ़ा था, अति चतुर था, वैसा मर्त्य लोक में मनुष्य कम पैदा होता है, जिस राजा की सेवा करने जाता, वहां दिन दस एक उस का आदर होता और, जब वह अपना गुन प्रकाश करता तब वह राजा उसे

देस निकाला देता * इस तरह से देस२ भटकता, दुख पाता, कामा नगरी में आन पहुंचा. काम सेन वहां का राजा था, उस के यहां काम कंदला एक पातुर थी, वह गोया उरबसी का औतार थी. गंधर्व बिद्या में अति चतुर थी, वुह राजा की सभा में नृत्यकर रही थी, माधो भी उसी राजा के द्वार पर जा पहुंचा. द्वारपालों से कहा राजा को जाकर हमारा समाचार कहो, आप के दरसन को एक बिराह्मन आया है; डिऊड़ीदार उस की बात सुनी अनसुनी कर गये, वह हारा मांद: वहीं बैठ गया, जों२ वहां से मृदंग की आवाज़, और गाने की सदा आती थी, तों२ यह सिर धुनकर कहता था, कि राजा भी मूरख है, और उस की सभा भी कूढ़ है, जो बिचार नहीं करती; यही बात पांच सात दफ़अ कही, द्वारपाल ख़फ़ा हो बिराह्मन देख राजा के डर से कुछ कह तो न सके, पर राजा के सनमुख जा, हाथ जोड़ खड़े हुए, महाराज ने जो उन की तरफ़ देखा, उन्हों ने बिनती कर कहा, एक बिराह्मन बिदेसी, दुरबल द्वार पर आन बैठा है, सिर डुला२ कर कहता है, राजा की सभा के लोग अति मूरख हैं, जो गुन बिचार नहीं करते. तब राजा ने उन द्वारपालों से कहा, जाकर उस से पूछो, कि उन को मूरख तू ने किस लिये कहा? उन्हों ने राजा की आज्ञा पाय, पौर पर आय बिराह्मन से पूछा; महाराज ने आज्ञा की है उन के गुन में दोष क्या है? वह तुम बताओ, तो हम तुमहारी बात सच जानें. उस्ने कहा बारह आदमी चार२ तीन तरफ़ में खड़े हुए जो मृदंग बजाते हैं, तिन में पूरब मुखवालों में एक मृदंगी का अंगूठा नहीं है, इस से सम पर

साथ हलकी पड़ती है, इस से मैं ने सब को झूठ कहा है, न मानो तो तुम जाकर देख लो * वे दौड़े हुए राजा के पास आये, सब बातें सुनाईं, राजा ने पूरब दखन के चारों मृदंगियों को बुला, एक२ का हाथ देखा तो उन्हों में एक का अंगूठा मोम का बना हुआ था; यह तमाशा राजा देख प्रसन्न हुआ, और उस बिराह्मन को बुलाया; वह आकर सनमुख हुआ, राजा ने दंडवत की, और उसने आशीस दी, फिर शिष्टाचार कर गद्दी पर बिठलाया; जैसे वस्त्र, आभूषन आप पहिने थे, वैसेही मंगा बिराह्मन को पहिनाये, और काम कंदला को बुला आज्ञा की, कि यह महा गुनी है इस के आगे अपना गुन तुम प्रकाश करो जिस में यह प्रसन्न होवे * काम कंदला राजा की आज्ञा पाय अपना गुन ज़ाहिर करने लगी; संगीत नृत्य का आरंभ किया. शीशे रंग के भरे हुए सिर पर धर, मुंह से मोती पिरोती हुई, हाथों से बट्टे उछालती हुई, नाचने लगी; सब साज़ सुर मिलाये हुए नाचती थी, इस में फूलों की और अतर की ख़ुशबो पाकर एक भौंरा उड़ता हुआ आकर उसके कुच की भिटनी पर बैठा, और डंक मारा, उसके बदन में पीर हुई, तब बिचारा जो कुछ भी हरकत करती हूं, तो ताल भंग होगा, और मेरे गुन की हंसी होगी, इतना जी में सोच भंडार बिद्या कर, सांस रोक, कुच की राह से निकाली पौन लगतेही, वह भौंरा उड़गया. माधो इस गुन को देखतेही मोहित हो बोला, धन्य है तुझे, और तेरे करतब को! यह कह प्रसन्न होकर, वस्त्र और आभूषन जो राजा ने दिये थे सब उतार दिये. यह देख राजा और मंत्री आपस में कहने लगे, कि

देखो इस बिराह्मन ने क्या मूर्खताई की है, कि इस बेश्या को वे कपड़े और तमाम जवाहिर एक आन में बख्श दिया * यह जात का भिखारी; यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है, राजा ने छका हो बिराह्मन से पूछा, कि तू इसके किस गुन पर रीझा, वह मेरे आगे बयान कर? बिराह्मन ने कहा सुन राजा! तू भी मूर्ख है, और तेरी सभा भी कूढ़ है, तेरी सभा में यह ऐसा गुन प्रकाश करे और कोई गुन का बिचार न करे, इसके कुच पर भौंरा आन बैठा था, सो इस ने अपना सांस रोक, कुच की राह निकाल, उसे उड़ा दिया. यह काम देख सब कुछ मैं ने इसे बख्श दिया * माधो ने जब यह बात कही, तब राजा लज्जित हो रह गया, और कुछ राजा से न बन आया, कहा इसी समैं मेरे नगर से निकल जा, जो सुनूंगा कि तू इस नगर में है, तो मैं बंधवा कर दरया में डूबवा दूंगा. तब माधो ने कहा महाराज! मुझ से ऐसा क्या अपराध हुआ है जो आप मुझे देस निकाला देते हैं? राजा ने कहा मैंने जो कुछ तुझे दिया था सो तू ने मेरे ही आगे दान कर दिया; क्या मेरे पास देने को कुछ न था, जो तू ने दिया? सुन कर माधो मन मलीन हो राज सभा से निकल, बाहर जा, एक दरख़्त के नीचे ब्याकुल खड़ा हो, अपने जी में कहने लगा, कि माता बेटे को विष दे और पिता पुत्र को बेचे, और राजा सर्बस ले, तो कोई सरन किस की ले, फिर कहने लगा, कि राजा ने तो मुझे निकाला अब मैं कहां रहूं? यों अनेक२ भांति की चिंता कर, काम कंदला का नाम ले ले रोता था, और इधर काम कंदला भी राजा से बहाना कर, बिदा हुई, और एक आदमी

दौड़ाया, कि वह बिराह्मन जाने न पावे, उसे ले आकर मेरे मकान में बिठा. वह आदमी गया, और बिराह्मन को ले आकर उसके मंदिर में बिठाया, इधर से यह भी तुरत जा पहुंची, दोनों आपस में बैठ कर प्रेम की बातें करने लगे. तब उस बिराह्मन ने कहा मुझे राजा ने देस निकाला दिया है, और तू ने अपने घर में बुला बिठलाया, जो यह बात राजा सुनेगा मेरा प्रान जायगा तो मैं दुख से छुटूंगा, पर तुम्हें भी राजा अति कष्ट देगा, इस से ऐसी बात करनी उचित नहीं है, कि अपनी जान जाय, और जग हंसाई हो; प्रेम जो है सो दुख की खान है, जिस ने प्रेम के पैंडे में पांव दिया, उस ने कभी सुख न पाया. ये बातें माधो की सुन कर कामकंदला ने कहा कि अब तो मैं इस पंथ में आई जो कुछ करे सो भगवान * इतना कह सब साज़ बाज़ मंगवा अपनी विद्या ज़ाहिर करने लगी, जितनी विद्या उसे याद थी उतनी जब प्रकाश कर चुकी; तब माधो ने उन्हीं जंत्रों के साथ अपना भी गुन सब कर दिखाया: जब रात थोड़ी सी रहगई तब कामकंदला ने कहा कि तुम ने श्रम बहुत किया, चलकर आराम कीजिये; यह कह माधो को रंग महल में ले गई, और जितनी खुशी थी सब की, जब गजर बाजा दोनों के जी में राजा की बात याद आई, सुध बुध जाती रही, घबरा कर माधो ने कहा सुन सुन्दरी! रात तो आनंद से बिताई, और अब जो मैं यहां रहूंगा, तो दोनों के प्रान जायेंगे, इस से कुछ जतन कीजिये जिस में निर्द्वंद आनंद से रहिये. मैं ने एक बात जी में बिचारी है कि, अब मैं यहां से जाऊं, और कुछ उपाय कर फिर आ तुझे भी

यहां से ले जाऊं, तू अपना जी मज़बूत रख मैं ज़रूर आकर तुझ से मिलूंगा, यह बचन मैं तुझे देकर जाता हूं. इतनी बात सुनतेही वुह तो मूर्छा खा गिर पड़ी, और माधो ने उठकर राह ली; वहां से निकल के बन२ फिरने लगा हाय कामकंदला२ करने. इधर इसे भी सखियों ने गुलाब का नीर छिड़क कर उठाया, अब कुछ होश आया, तब वुह भी माधो२! पुकारने लगी; खाना, पीना त्याग किया, बुहतेरा सखियां समझाती थीं, उसके जी में एक न आती थी, जों२ गुलाब, कपूर, चंदन, ला२ कर लगाती थीं, तों२ चौगुनी दाह बढ़ती थी. किसी तरह से सीतलता न होती थी, जब कोई माधो का नाम, गुन सुनाता था, तब उसे ज़रः आराम आता था * उधर माधो भी भटक२ अपने मन में बिचार ने लगा, अब संसार में कौन है जिस के निकट जाइये, जो हमारा दुख दूर करे. इस में उसे याद आया कि सुनते हैं राजा बीर बिक्रमाजीत पर दुख निबारन है, भला उसके पास जाइये, और देखिये, कि लोग सच कहते हैं, या झूठ? यह बिचार कर उज्जैन नगरी को चला गया, वहां लोगों से पूछा, यहां राजा से भेट आधीन की क्योंकर होती है? तब एक उस नगर का बासी बोला, गोदावरी नदी के किनारे शिव का मठ है, उस मठ में राजा शिव के दरशन को नित आता है, वहां तू जा, जो तेरा मनोरथ है, सो तू कह, तेरी कामना पूरी होगी * यह सुन कर वह, वहां गया, और उस मठ के द्वारे की चौखट पर लिखा, कि मैं बिराह्मन, बिदेसी, अति दुखी बिरह से व्याकुल तुम्हारे नगर में आया हूं, यह सुन के कि राजा पर दुख

बिराजमान है, और जो यह दुख मेरा जायगा तो मैं अपना प्रान रक्खूंगा, नहीं तो तीसरे दिन गोदावरी में डूब के प्रान त्याग करूंगा. यह मुक़र्रर जी में मैं ने ठहराई है, इस में तुम राजा हो, और सदा गौ, बिराह्मन की रक्षा करते आये हो, और अब भी करोगे, मैं ने अपने मन की बात सब प्रकाश कर दी है * इतनी बातें कह पुतली ने राजा भोज से कहा, कि सुन राजा! बीरबिक्रमाजीत का यह नेम था, कि अन्न दुखी, बस्त्र दुखी, द्रव्य दुखी, भूमि दुखी, बिरह दुखी, और किसी तरह का दुखी, नगर में आता, राजा सुन कर जब तक उसका दुख न मिटा देता, तब तक अन्न, जल का तो क्या ज़िक्र है, दांतन भी न चीरता था.[49] सवेरे राजा जब महादेव के दर्शन को गया, दर्शन कर परिक्रमा करने लगा, राजा ऊंची दृष्टि कर देखे तो कोई दुखी अपने दुख की अवस्था लिख गया है, और राजा ने सब बांच, महादेव को दंडवत कर मंदिर में आय आज्ञा की, कि माधो नाम बिराह्मन हमारे नगर में आया है, जो कोई उसे ढूंढ लावे, तो मुंह मांगा[50] द्रव्य पावे * यह बात सुन, लोग नगर में ढूंढन को निकले, घाट२ बाट२ टोला२ महल्ल:२ बाग़ बाग़ीच: सब नगर ढूंढ फिरे और कहीं ठिकाना उसका न पाया. तब राजा ने एक दूती बुला कर आज्ञा की, कि जो तू उसे ढूंढ लावे, तो मुंह मांगा धन पावे: उस ने कहा महाराज! यह क्या कठिन बात है, मैं अभी जाकर ढूंढ लाती हूं * यह कह उस ने वहां से सीधी राह मंदिर की ली, जहां उसने लिखा था, जाकर मंदिर के पास बैठ रही, सांझ समैं वह भी भटकता हुआ आन पहुंचा; इसे उसे देख

मन में बिचारा, कि हो न हो वह बिरही यही है, किस लिये कि मुंह पीला, आंसू जारी, तन चीन, मन मलीन, हो रहा है. यह तो वह बिचार कर रही थी, कि वह बिराह्मन वहां आ बैठा, और एक बार हाय कामकंदला२! पुकार उठा. झट उसने जा उस का हाथ पकड़ लिया, और कहा मैं तेरे ढूंढने के लिये राजा की आज्ञा पाके आई हूं, तू उठ, मेरे साथ जल्दी चल, तेरा मनोरथ पूरा होगा, तेरे दुख से राजा निपट दुखी है * यह सुनतेही, उसके साथ वह हो लिया, उसे लिये हुए वह राजा के सनमुख पहुंच कर कहने लगी महाराज! यह वही बियोगी है, जिसके लिये आपने यह दुख पाया है. तब राजा ने उस बिराह्मन से पूछा, कि तू किस के बियोग से ऐसा व्याकुल हो रहा है, मेरे आगे कह? तब उसने एक आह भर कर कहा महाराज! कामकंदला के बियोग में मेरी यह गति हुई है, वह राजा कामसेन के पास है, तू धर्मात्मा है, और मैं तेरे पास आया हूं, तू मुझे उसको दिला दे तो जी दान दे; यह सुनते ही राजा हंस कर बोला सुन बिराह्मन! वह बेश्या है, तू ने उसके प्रेम में अपना सब धर्म, कर्म छोड़ा, यह तुझे उचित नहीं है. माधो ने कहा महाराजा! प्रेम का पंथ निराला है, जो नर प्रेम करते हैं, सो अपना तन, मन, धर्म, कर्म, सब समर्पन करते हैं, प्रेम की अकथ कहानी है, मुझ से कही नहीं जाती * राजा ने ये बातें सुनी, और उसे अपने साथ ले, मंदिर में गया, और सब रानियों को आज्ञा की, कि तुम बनाव, सिंगार कर के आओ. रानियां सब सिंगार कर आईं, और उस बिराह्मन से राजा ने कहा, जिसे तुम्हारी इच्छा हो,

उसे इन रानियों में से लो, अपने मन का दुख बिसारो, और सुख चैन करो * उसे जवाब दिया महाराज! मैं आप के आगे सत्य कहता हूं, कि मेरी आंखों में वह बस रही है, इस लिये मेरी दृष्टि में कुछ नहीं आता. चातक की तृषा खात की बूंद से बुझती है, और जल पर उसे रुच नहीं होती. ऐसी प्रेम की दृढ़ता बिराह्मन की देख, राजा ने अपने मन में बिचारा, कि इसे साथ लेजा कर, कामकंदला को दिला दूं, उसके बिना इस के मन को थिरता न होगी * यह बात राजा ने बिचार बिराह्मन से कहा देवता! तुम अस्नान, पूजा कर कुछ खा लो, तब तलक मैं भी अपने लोगों को बुला, तुम्हें साथ ले चलूं, और उसे दिला दूं, तुम अपने जी में किसी और बात की चिंता मत करो, मैं ने तुम से यह बचन किया * बिराह्मन अपने खाने पीने में लगा, राजा ने प्रधान को बुला कर आज्ञा की, कि मेरे डेरे नगर के बाहर निकलें, चार घड़ी के बअ़द कामा नगरी की तरफ़ मेरा कूच है, सब लोगों को ख़बर दो. इस में कितनी एक देर के पीछे, राजा तैयार हो बिराह्मन को साथ ले, कूच कर डेरों में जा दाख़िल हुआ, और जितने राजा के नौकर थे, सब रिकाब में हाज़िर थे * राजा वहां से कूच, दर कूच जाता था, कितनी एक मंज़िलों के बअ़द, कामा नगरी से दस कोस इधर डेरा किया, और उस राजा को पत्र लिखा, कि हम इस लिये आये हैं, कि तुम्हारे यहां जो कामकंदला पातुर है उसे भेज दो, नहीं तो हम से युद्ध करने का सामान करो * यह पत्र लिख, एक दूत के हाथ राजा के पास भेज दिया; राजा को ख़बर हुई कि एक दूत राजा

बीरविक्रमाजीत का ख़त लेकर आया है, यह सुनतेही राजा ने उसे सनमुख बुलाया, आ उसने जुहार कर, ख़त राजा के हाथ दिया, राजा ने उस चिट्ठी को बांच कर कहा कि अच्छा कहो अपने राजा से चले आवें हम युद्ध करने पर तैयार हैं * दूत ने आ राजा से कहा, महाराज! वह लड़ने पर तैयार है, राजा ने भी हुकम अपने लोगों को दिया, कि हमारा भी दल तैयार हो. फिर राजा के जी में आया, कि जिस के वास्ते हम आये हैं, उसकी भी प्रीत की परीक्षा लिया चाहिये, इस तरह जी में ठहरा बैद का सवांग बन, राजा कामा नगरी में गया, लोगों से मकान कामकंदला का पूछ दरवाज़े पर जा, बैद! हकीम! कर पुकारा * आवाज़ सुनतेही एक दासी बाहर निकल आई, पूछा कि तुम बैद हो तो हमारी नायका का कुछ इलाज करो, जो वह अच्छी होगी तो तुम्हें बहुत से रूपये मिलेंगे. ये बातें कर दासी उसे साथ लेकर, कामकंदला के पास गई, राजा ने देखा, कि निरजीव पड़ी है, राजा ने उस की नाड़ी देख कर कहा, कि इस के तईं रोग और कुछ नहीं, प्रीतम का वियोग है, जिस से इस की यह गति बनी है. यह बात सुन कामकंदला ने आंखें खोल, उस की तरफ़ देखा, और कहा कि इस का कुछ इलाज तुम्हारे पास हो तो करो, तब उसने कहा कि इस का इलाज तो था पर इस समैं हमसे कुछ कहते बन नहीं आता; तब वह बोली तुमहारे पास क्या इलाज था, वह बताओ? राजा ने कहा माधो नाम एक बिराह्मन था, उसे हम ने उज्जैन नगरी में बिरह वियोगी अति सोगी देखा, सो वह दुख पाय, मरगया. यह सुनतेही हाय कर, उसने भी

अपना प्राण छोड़ दिया. जितनी दासी, दास उस के घर के थे, यह दशा देख सिर पीटर सब रोने लगे, तब इसने कहा, कि तुम कुछ चिंता अपने मन में मत करो, इसे मूर्छा आई है, कितनी देर में सुध आवेगी, तुम इस की चौकसी करते रहो, मैं जाकर अपने घर से औषध लाऊं * राजा उलटा फिर अपने दल में आया, और माधो के आगे उस के मरने की खबर कही, सुनतेही एक आह के साथ उस की भी जान निकल गई. यह देख राजा अपने जी में पछता कर बिचार करने लगा, कि जिस के वास्ते इतनी सेना साज के पर भूमि में आया और उसे इस तरह से खो दिया. ये दो हत्या मेरे पर हुईं, अब अपना भी प्रान रखना उचित नहीं * यह बात जी में ठहरा, चंदन बहुत सा मंगवा, चिता बनवा, राजा जीता जलने को तैयार हुआ. ,दीवान, प्रधान, ने जितना मनअ किया न माना: ज्यों चाहे कि उस चिता में बैठ आग लगावे, कि बैताल ने आ हाथ पकड़ लिया, और कहा, कि राजा! तू अपना जी क्यों देता है? तब इस ने कहा कि दोकी जान मैं ने जान के खोई, अब मेरा भी जीना संसार में उचित नहीं, इस बदनामी के जीने से मरना उत्तम है * बैताल ने कहा, कि राजा मैं अमृत ला देता हूं, तू दोनों को जिला दे, यह कह जल्द बैताल पाताल से अमृत ले आया, उस ब्राह्मन पर छिड़का, वह जी उठा, फिर लेजाकर कामकंदला पर छिड़का, वह भी जी उठी, और माधो२ लगी पुकारने, राजा की सूरत देखकर कहा तुम कौन हो, और कहां से आये हो, मुझ से कहो? तब राजा ने कहा, हम बीर बिक्रमाजीत हैं, माधो का बिरह

दूर करने के लिये उज्जैन नगरी से यहां आये हैं, तू ख़ातिर जमा रख, कि तुझे हम माधो से मिला देंगे. यह सुनते ही वह उठ राजा के पांव पर गिर पड़ी, कि राजा यह तुम जीदान होगे, और जैसा तुम्हारा जस सुनते थे, सो दृष्टि में आया; इतनी बात कह राजा वहां से फिर अपने लशकर में आया. दूसरे दिन अपनी फ़ौज ले कामा नगरी पर चढ़ धाया, वहां के राजा से युद्ध किया, उस राजा ने हार मानी, और क़बूल किया, कि हम कामकंदलां को भेज देंगे, और यह जो हम ने युद्ध किया, सो आप के दर्शन के वास्ते; और इस लिये कि किसी तरह हमारे नगर में आप का चरन पड़े * आगे राजा से मुलाक़ात करके वह राजा अपने मंदिर में लेगया, बक्कत भेट आगे धर कामकंदला को बुला, राजा के आगे खड़ा किया, और उसने भी माधो को बुला, कामकंदला का हाथ पकड़ हवाले किया, फिर वहां से कूच कर, अपने नगर में आये, माधो को बक्कत धन, दौलत दे बिदा किया. इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि ऐ राजा भोज! इतनी सामर्थ और ऐसा साहस जो तुझ में हो तो, सिंहासन पर चरन धर, नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा." वह भी दिन राजा का टलगया दूसरे दिन वह फिर आन मौजूद क्रुआ तब *

* अनूपरेखा बाईसवीं पुतली *

बोली कि "राजा! तू अपने मन की चिंता छोड़ दे, मैं जो कथा कहती हूं वह सुन. एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत सभा कर बैठा

था, प्रधान से पूछा, कि मनुष्य बुद्धि अपने कर्म से पाते हैं या उन के माता पिता सिखाते हैं? सुन कर मंत्री बोला कि महाराज! यह नर पूर्व जन्म में जैसा कर्म करे है तैसा विधाता उस के कर्म में लिख देता है, तिसी प्रमान बुद्धि होती है, माता पिता के सिखाये बुद्धि होती नहीं; कर्म का लिखा ही फल पाता है, आदमी२ को क्या सिखावे, और जो सीखे से बुद्धि हो, तो सभी पंडित हों. इस से महाराज! कर्म के लिखे बिना विद्या होती नहीं, कड़ोड़ यतन कोई करे कर्म की रेखा मेटे मिटती नहीं. राजा ने कहा, ऐ दीवान! तू ने यह क्या कहा? संसार में यह तो ज़ाहिर देखते हैं, कि जन्म लेते ही, लड़का माता पिता से जो सुनता है, और जो देखता है, उसी बोहार से चलता है, इस में कर्म का लिखा क्या है, यह सिखाये से सीखता है, और जैसी संगत में बैठता है, तैसी ही उस की बुद्धि होती है. इतनी बात सुन मंत्री बोला कि धर्मावतार! आप की बराबरी हम नहीं कर सकते, यह अपने मन में विचार के तुम समझो, कि कर्म का लिखा ही फल मिलता है. तब राजा ने कहा अच्छा इस बात की परीक्षा ली चाहिये, तब राजा ने एक महा बन में मंदिर बनवाया, कि जहां मनुष की आवाज़ भी न जाय. एक अपने बेटे को पैदा होतेही उस मंदिर में भिजवा दिया, और उसके साथ एक दाई ऐसी कर दी, कि आंखों से अंधी, कानों से बहरी, मुंह से गूंगी, वही उसे दूध पिलाती थी, और परवरिश करती थी; फिर इसी तरह से एक दीवान के बेटे को, एक बिराह्मन के पूत को, एक कोतवाल के पुत्र को, जन्मते ही गूंगी, बहरी, अंधी, दाइयां दे उसी

मंदिर में भिजवा दिया, दिन ब दिन वे बढ़ने लगे, और ऐसी गाढ़ी चौकी उस मंदिर के दो२ कोस गिर्द में बैठा दी, मनुष्य के जाने की तो क्या सामर्थ थी, ढोल, नक़ारे की भी आवाज़ न जाती थी. इस तरह से बारह बरस जब बीत गये, तब एक दिन बिराह्मनी ने अपने स्वामी से कहा, कि एक युग पूरा हो चुका, और मैं ने अपने पुच का मुंह नहीं देखा, कदाचित, जी निकल जाय तो मन में देखने की अभिलाषा रह जाय, इस से तुम अब राजा के निकट जाकर, कहो कि महाराज! बारह बरस बीत चुके, मैं ने अपने बेटे का मुंह नहीं देखा, अब मेरे जी में है कि पुच को घर सौंप कर दंडी हो तपस्या करूं * यह बिराह्मनी की बात सुन, बिराह्मन तैयार हो राजा के पास गया. राजा ने देखते ही दंडवत की, और उस ने भी असीस दी. राजा बोला तुम आनंद मंगल से हो? बिराह्मन ने कहा कि महाराज! आप की कृपा से सब आनंद मंगल है, पर मैं एक कामना कर आप के पास आया हूं, यह सुन कर राजा ने कहा कि जो तुम्हारा काम है सो कहो. तब उस बिराह्मन ने अपना वह अह्वाल सब कहा, सुनते ही राजा ने प्रधान को बुला, आज्ञा की, कि उन चार बालकों को अब मंगाओ, कि बारह बरस हो चुके: दीवान सुनतेही तुरत आप सवार हो उन लड़कों को लेने गया. पहले उन में से राज कुंवर को ले आया * नख, और केस बढ़े हुए, शरीर तमाम मैला कुचैला, इस भेष से राजा के सनमुख ला खड़ा किया. राजा ने देख कर कहा कि सूत! तुम कुशल से हो, इतने दिन तुम कहां थे, और अब कहां से आये? सब ब्यौरा अपना हम से समझा

कर कहो. यह सुन कुंवर ने हंसकर राजा से कहा, कि आप के पुन्य से सभी कुशल है, और आज का दिन भी कुशल का है, जो आप के दर्शन पाये * यह सुन कर अपने मन में हरषित हो, राजा ने मंची की तरफ़ देखा, मंची उठ हाथ जोड़, जुहार करके बोला, कि महाराज! यह सब कर्म ही का लिखा है * फिर दीवान के पुत्र को बुलवाया, आकर वह भी राजा के सनमुख भयानक भेष से खड़ा हुआ, जैसे बनसे भालुक को पकड़ लाते हैं, नाख़ून, और बाल उसी तरह बढ़े हुए, शरम से नीची गर्दन किये, खड़ा था, राजा ने पूछा कि तुम अपनी कुशल कहो, कहां थे, और किधर से आये हो? तब वह बोला महाराज! कुशल चेम कहां है जो उधर संसार में उपजते हैं सो इधर बिनसते है. जैसे घड़ी भरती और डूब जाती है, तैसे नर जानता है कि दिन जाता है, पर दिन जाने है, कि नर जाता है, यही जगत का व्योहार है, इस में कुशल चेम काहे की कहूं. ये उसकी बातें सुन राजा ने दीवान से कहा, इसे यह किसने सिखाया है? जो कुछ तू ने कहा था यह सब सच है यह फल कर्म सेही इसने पाया * फिर राजा ने कोतवाल के बेटे को बुलवाया, उसने आते ही, राजा को सलाम किया, और हाथ जोड़ खड़ा हुआ. राजा ने कुशल पूछी, तब उसने कहा पृथवी नाथ! दिन, रात नगर का पहरा हम देते हैं, इस में भी चोर आन चोरी करता है, बदनाम हम होते हैं, बिना अपराध कलंक लगे तो, फिर कुशल काहे की है? * राजा ने फिर बिराह्मन के पुत्र को बुलाया, जब वह सनमुख आया, राजा ने दंडवत की, उसने मंत्र पढ़ असीस

ही, राजा ने उसकी कुशल पूछी, उसने कहा कि महाराज! आप पूछें हैं मुझ से यह बात कि तेरे शरीर में कुशल है, सो कुशल कहां? मेरे शरीर में, दिन ब दिन उमर घटती आती है, महाराज! कुशल तो तब कहने में आवे, कि मनुष्य चिरंजी होवे, जीवन, मरन साथ है, उसकी क्या खुशी करूं? * चारों की चार बातें सुन कर दीवान ने कहा, कि सच है पढ़ाने से पंडित नहीं होता, पंडिताई जो कर्म लिखी होय तो मिले. यह कह दीवान के तईं सब प्रधानो का सरदार किया, और अपने राज काज का भार दिया; और उन चारों लड़कों के बिवाह कर दिये, और बज़ुत धन दौलत दी * इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज! कलयुग में ऐसा धर्मात्मा, साहसी राजा होना कठिन है, जो इतनी बुज़ुर्गी, और धन पाय, अपनी कही बात पर ख़ियाल न करे, और जो न्याव का धर्म थी सोही कहा, ऐसा जो तू काम करे, और इस जोग हो, तो सिंहासन पर पांव धर और नहीं तो अपनी यह आस तज." राजा अपने मन में चिंता करता ज़ुआ, वहां से उठ मंदिर में आया, रात को लेटा ज़ुआ बिचार ने लगा, कि देखूं मेरा भाग फिरे या आभागा रहूं. रात तो इसी तरह बीत गई, सुबह ज़ुई, फिर वहीं आन मौजूद ज़ुआ, चाहे पांव उठा सिंहासन पर धरे इस में *

* करुनावती तेईसवीं पुतली *

क्रोध कर बोली "सुन राजा! जो कदाचित तू इस पर पांव रक्खेगा, तो तुर्त जल कर भस्म हो जायगा, और तुझे लज्जा नहीं

आती, कि तू घड़ी२ यह इरादः करके आता है, और जो कोई होता तो फिर मुंह न दिखाता; जिस सिंहासन पर राजा बीरबिक्रमाजीत बैठे, तिस के बैठ ने का तू मनोरथ करे, हंस की बराबरी कौवा नहीं करसकता, सिंह के समान गीदड़ को कोई नहीं मानता, पंडित के बराबर कोई मूरख को नहीं जानता, राजा तू निर बुद्धि है, और कुछ तुझे ज्ञान नहीं, जैसे मछली थोड़े जल में उछलती है, वैसे तू थोड़ी प्रभुता पाकर इतरा चला है * ऐसी२ कठिन बातें सुन कर पुतली रोने लगी, राजा अपने चित में चिंता कर उस पुतली से पूछने लगा, कह सुन्दरी! तू क्यों रोती है? अपने जी का दुख समझा कर मुझ से कह, राजा बीरबिक्रमाजीत में क्या गुन पुरुषार्थ था? यह सुन करुनावती पुतली बोली, राजा! जो तुम स्थिर होकर बैठो और कान देकर सुनों, तो मैं सब कथा कहती हूं * राजा यह बात सुन, प्रसन्न हो, आसन बिछवा, वहां बैठ गया, और जितने लोग राजा के साथ थे, गिर्द, औ पेश, वे सब बैठ गये. फिर पुतली बोली कि राजा! बीरबिक्रमाजीत के गुन राजा भोज तू सुन, ऐसा जसी, सहासी, पुन्यात्मा, इस कलयुग में कोई जन्मा नहीं, और न कोई जन्मेगा, जिस समैं राजा बिक्रमाजीत संख को मार, राज गद्दी पर बैठा, संख के दीवान को बुला कर कहा, कि तुझ से मेरा काम न चलेगा, इस से यह बिहतर है, कि बीस दास मुझे अच्छे ढूंढ कर लादे, जो राज काज करने के लायक़ हों, क्योंकि तुझ से काम का बंदोबस्त न होगा, मैं उन से सब अपना काम लूंगा * राजा की आज्ञा सुन दीवान बीस आदमी उसी नगर से ढूंढ कर ले आया,

कुल में, वैस में, सुन्दरता में, सब के सब अच्छे थे. राजा के साम्हने खड़े कर दिये, राजा उन को देखतेही बहुत प्रसन्न हुआ, और उसी समें सब को बागे पहना, पान देकर, कहा कि तुम हमारी ख़िदमत में सदा हाज़िर रहो फिर उस के कई दिन के बअ़द उन में से किसी को दीवान, किसी को कोतवाल, किसी को फ़ौजदार किया * ग़रज़ इसी तरह से हर एक को एक काम दे पुराने लोगों को जवाब दिया, और सब नया बंदोबस्त किया, पर एक उस पुराने दीवान को जवाब न दिया: दीवान अब अपने घर में बैठा करता, वे सब पुराने लोग आकर हाज़िर हुआ करते, और आपुस में चरचा करते, कि यह राजा बुद्धिवान है, जो राज यों लिया, और बंदोबस्त यों किया. कई दिन के बअ़द दीवान ने उन लोगों से कहा, कि तुम मेरे पास न आया करो, इस लिये कि काम तो मेरे हाथ तुम्हारा निकलता नहीं, और नाहक़ को राजा सुनेगा, तो ख़फ़ा होगा, और कहेगा, कि यह अपने घर में क्या मता किया करता है, मैं अपनी बदनामी से डरता हूं, कुछ तुम मेरे इस कहने का बुरा न मानना * यह सुन कर उन में से फिर कोई उस के पास न आया. वह अपने मन में बिचार करने लगा, कि ऐसा कुछ काम कीजिये, जिस में राजा संतुष्ट हो, रैन दिन यही बिचार करता रहता था, एक दिन वह प्रधान नदी किनारे अस्नान करने गया, वहां अस्नान कर कमर भर पानी में खड़ा हुआ जप करता था, इस में उस नदी में एक फूल अति सुन्दर कि वैसा कभी दृष्टि में न आया था, बहता हुआ देखा, अपना जप छोड़ कर, आगे बढ़ फूल लेकर, जी में

बिचारा कि यह राजा की भेट करूंगा, तो वह देख कर बहुत खुश होवेगा, वह फूल हाथ में ले खुशी२ अपने घर में आ, कपड़े दरबार के पहन, राजा के पास गया, और फूल नज़र किया. राजा फूल ले बहुत खुश होकर, बोला कि अपने राज, पाट का मैं ने तुझे प्रधान किया, उसने उठ कर भेंट दी, और आदाब बजा लाया; फिर राजा ने कहा, इस फूल का वृक्ष मुझे लादे, अगर लादेगा तो मैं तुझ से बहुत खुश हूंगा, और जो न लादेगा, तो अपने नगर से निकाल दूंगा * वह राजा की आज्ञा ले, अपने मंदिर में आया, और जी में बिचार करने लगा, कि मैं ने पूर्व जन्म में ऐसा क्या पाप किया है? जो ऐसी सुन्दर वस्तु राजा को दी, और राजा ने प्रसन्न होकर भी, फिर यह क्रोध किया, कर्म की गति बूझी नहीं जाती, कि भला करते बुरा होवे * अकेला बैठ बहुत चिंता करने लगा, कि अगर राजा की आज्ञा न मानूं तो देस निकाला मिले, और ढूंढने जाऊं, तो कहां से ढूंढ कर लाऊं, जो दुख पाकर कहीं जाऊं और ढूंढे न पाऊं तो और भी दूना दुख होगा, मैं यह जानता हूं कि काल मेरे निकट आ पहुंचा है, इस से अपयश का मरना भला नहीं, अगर योंहीं मरना है तो बन में जाइये, जो ढूंढे मिल जाय तो ले आइये, नहीं तो वहीं मर जाइये * इतनी बातें अपने जी में बिचार ढाढ़स करके बैठा, अपने दीवान को बुलाकर कहा, कि किसी कारीगर बढ़ई को बुला दो, कि एक नाव ऐसी हमें तैयार कर दे, कि बग़ैर मल्लाह, और बिदून खेवटिये के जिधर को चाहें ले जावें. योंहीं कारीगर, बढ़ई, को बुलवा दीवान ने हाज़िर कर दिया;

बढ़ई ने कहा कि महाराज! कुछ मुझे ख़र्च की आज्ञा होवे, तो मैं जल्द बना लाऊं, मंत्री ने दीवान को कहा, जितने यह रुपये मांगे, उतने इसे दो, तो यह जल्द बना लावे; रुपये उसे दिये, वह घर को लेगया, और कितने दिनों के बग़द नाव तैयार करके ख़बर दी, कि तैयार हो चुकी. योंहीं दीवान ने अपने स्वामी से आकर कहा, आप ने जो नाव बनवाने की आज्ञा दीथी सो तैयार है * यह सुनते ही दीवान उठ नदी किनारे आ, नाव को देख, प्रसन्न हो उस बढ़ई को जोड़ा, घोड़ा, दे पांच गांव इनामकर बिदा किया. दीवान अपना सरंजाम नाव पर रखवा आप कुटुम्ब से बिदा हो, हाथ जोड़ कर कहने लगा, कि जो हम जीते फिरेंगे, तो फिर तुम से मिलेंगे, और जो मर गये तो यही बिदा हमारी है * वह जब यह कहकर रुख़स्त हुआ, तमाम घर के लोग कूक मार२ रोने लगे; फिर वह भी जी भारी किये हुए उस नाव पर बैठा, पाल चढ़ा, किश्ती खोल दी, जिस तरफ़ से वह फूल बहता हुआ आया था, उसी तरफ़ को वह चला जाता था, और दोनों कराड़ों के दरख़्तों को देखता जाता था. कितने दिनों में चला२ एक महावन में जा पहुंचा, और खाने की जिनस भी तमाम हो गई, तब उस ने अपने जी में विचारा कि अब नाव पर बैठ रहना उचित नहीं, जिस काम को आये हैं उस काम की फ़िकर किया चाहिये. यह अपने जी में कहता था, और किश्ती पाल पर उड़ाये जाता था, कि एक पहाड़ दूर मियान उस दरया के नज़र आया, और उसी पहाड़ से पानी आता था. किश्ती वहीं लगा आप उतरकर पहाड़ पर गया, क्या देखता

है, कि जहां तहां हाथी, गैंडे, शेर, अरने, दहाड़ रहे हैं, सिवाय उन की आवाज़ों के कोई बात कान नहीं पड़ती, सुन२ आवाज़ें अपने जी में सहमा जाता था, इस पर भी आगेही पांव धरता था, जब उस पहाड़ को लांघ गया, वहां जाकर देखे, तो एक वैसा ही फूल बहा हुआ चला आता है, उस फूल को देख जी में ढाड़स सी हुई, कहने लगा, कि वैसा फूल दूसरा भी देखा, भगवान चाहे तो इस भी नज़र आवे * जों२ आगे बढ़ा तों२ फूल और भी बहते देखे वह चंदेश: उस के जी से कम हुआ, और दिल में कुछ क़रार आया. आगे देखता क्या है, कि एक बड़ा पहाड़ है, और उसके नीचे एक मंदिर है, उस मंदिर को देख कर अपने मन में बिचारा, कि ऐसा सुन्दर मंदिर इस जगह बना हुआ है, चाहिये कोई मनुष्य भी हो. यह कहता हुआ उस मंदिर के पास जा पहुंचा, और वहां जाकर देखे, तो एक तरवर में एक तपसी ज़ंजीर पांओं में बांधे हुए उलटा लटक रहा है, हाड़, मांस, चाम, सूखकर काठ हो गया है, और उस में से एक२ बूंद रक्त की उस नदी में गिरती है * और वह फूल हो वहां से बहती चली जाती है * ऐसे अचरज को देख जी में यों कहने लगा, कि भगवान की लीला कुछ बुद्धि में नहीं आती, नीचे निगाह करके देखे तो बीस जोगी ऐसेही जटाधारी बैठे हैं, और सूख के वे भी खड़ंक हो गये हैं. और चारों तरफ़ उनके दंड कमंडल पड़े हुए हैं, और जिस ज्ञान ध्यान में जैसे बैठे थे, वैसेही बैठे हैं * यह दशा वहां की देख, प्रधान उलटा फिर अपनी नाव पास आया, नाव पर सवार हो, कितने दिनों में अपने नगर में आन पहुंचा, लोगों ने खबर

उस के आने की धाई पेशवा लेने को गये, और उसे ले आये, जो कोई आता था मिल कर खेम कुशल पूछ कर बधाई दे जाता था, घर में भी उस के नौबत बजने लगी, मंगलाचार होने लगा * यह ख़बर राजा ने सुनी और एक प्रधान को भेज दीवान को बुलाया, वह आनकर लेगया. यह जाकर राजा के पांव पर गिर पड़ा, राजा ने उठा छाती से लगा, खेम कुशल पूछी, और पूछा कहां २ तलक तू गया था, और कहां ठिकाना उसका कर आया? यह सुनते ही वे फूल जो लाया था भेंट किये, और हाथ जोड़ कर कहने लगा, कि महाराज! एक अचंभे की बात है, जो मैं कहूंगा तो आप न पतियावेंगे. फिर राजा ने कहा, कि जो तू ने अचंभा देखा है सो बयान कर, तब वह बोला. महाराज! मैं यहां से चला हुआ एक जंगल में पहुंचा, और वहां जाकर एक पहाड़ देखा, उस पहाड़ पर जब में चढ़ा, तो और एक पहाड़ नज़र आया, इस तरह के पहाड़ लांघ जब मैं आगे गया, एक पहाड़ के तले एक सुन्दर मंदिर देखा, जब मैं उसके पास गया, तो एक पेड़ पर एक तपसी पांओं में ज़ंजीर बांधे हुए उलटा लटकता हुआ नज़र पड़ा, मास, चाम, सब उसका हाड़ में सट रहा है, और रक्त उस देह से जो टपकता है सो फूल बन कर बहती है, और उसके नीचे देखा तो बीस तपसी आसन मारे जिस ध्यान में बैठे थे वोंके वोंहीं रहगये हैं, और जान एक में भी नहीं * यह सुनकर राजा हंसा, और मंत्री से कहा कि तू सुन मैं उसका बिचार तुझ से कहता हूं, कि वह जो तू ने तपसी संकल में लटकता देखा वह तो मेरी देह है, मैं ने पूर्व जन्म में ऐसी

कठिन तपस्या की थी, उसका फल यह राज मुझे मिला है; और ये जो बीस सिद्ध तू ने देखे सो बीसों मेरे हाथ हैं जो तू ने ला दिये थे और उस तपस्या के तेज से मेरे आगे कोई नहीं ठहर सकता, और उसी बल से मैं ने शंख को मारा, और यह पूर्व जन्म का लिखा था, इस में कुछ दोष मेरा नहीं • जब तलक मैं इस पृथिवी में अखंड राज करूंगा, तू तब तक मंत्री रहेगा, तू अपने जी में चिंता मत कर, इस में दोष तेरा भी कुछ नहीं, जैसा पूर्व जन्म का लिखा था सो हुआ, और जैसी तब उन्हों ने मेरी सेवा की थी, वैसा ही अब उसका फल भोग करेंगे, और तब उन्हों ने मेरे साथ जी दिया था, इस लिये मैं ने उन बीसों को अपने निकट रक्खा है, यह अपना परचा देने के लिये तुझ से निठुराई की थी, अब तेरा मन पतियाया, और तू ने हमारा मर्म बूझा, क्योंकि, सब लोग कहते हैं कि विक्रम ने अपने बड़े भाई को मारा, इस में दोष मेरा कुछ नहीं, और जो कर्म का लिखा है, सो हो रहता है, आज से मैं ने तुझे अपना प्रधान किया, और जिस में राज काज अच्छा होवे वह कीजो, यह बात किसी के आगे मत कहियो, इस लिये कि जो सुनेगा सो राज के लोभ से जोग कमावेगा * इतनी बात करुनावती पुतली कह कर बोली सुन राजा भोज! जितना राजा वीरविक्रमाजीत का राज था तिस का भार उसे दीवान को दे मुख़तियार कर दिया, और राज पाट हवाले किया, जो उसके समान हो तो इस सिंहासन पर बैठने का नाम ले, नहीं तो यह ख़ियाल दिल से दूर करे." यह साभृत, और वह दिन भी राजा का टल

गया, दूसरे रोज़ सुबह आन फिर सिंहासन के पास खड़ा हुआ तब में *

* चित्रकला चौबीसवीं पुतली बोली *

"सुन राजा भोज! मैं एक दिन की हकीकत राजा बिक्रमाजीत की तेरे आगे कहती हूं, सो तू दिल में अपने खूब तरह समझ, एक दिन राजा नदी के किनारे दसहरे के नहाने को गया था, वहां जाकर देखे तो एक रंडी बनियें की जवान खूब सूरत नदी के तीर खड़ी हुई बाल सुखाती है, और साम्हने उसके एक साहूकार बच्चा बैठा तिलक दे रहा है, और आपुस में दोनों की सैनें चल रहीं हैं, कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय, भौं मटकाय, बाल सुलझाती है, और कभी सिर का अंचल छाती से सरका, बदन दिखा, फिर छिपाती है, कभी आरसी दिखा, चूमकर छाती से लगाती है * इस तरह से अनेक२ रीति से चेष्टा कर रही है. और वह भी इसी तरह इशारे कर रहा है, उन दोनों की हालतें देख राजा ने अपने जी में बिचारा, कि इन का तमाशा देखा चाहिये, कि ये क्या करते हैं? राजा ने स्नान, ध्यान, अपना भी सब किया पर उन की ओर भी देखता रहा, इतने में वह स्त्री अस्नान कर, चद्दर ओढ़, घूंघट कर, अपने धाम को चली, और साहूकार बच्चा भी उस के पीछे२ चला. राजा ने एक हरकारा उन दोनों के पीछे लगाया, और उस हरकारे को कह दिया, कि इन दोनों का मकान देख सब बे

वाक़िफ़ हो आ, और हमें जल्दी ख़बर दे * जब वह औरत अपने घर में गई, तब उस ने फिर कर देखा, और सिर खोल कर हिलाया, फिर छाती पर हाथ धर अपने मंदिर में गई और सेठ के बेटे ने भी अपनी छाती पर हाथ रक्खा. यह ख़बर हरकारे ने आ राजा को दी; राजा भी अपनी सभा में आकर बैठा और एक पंडित से पूछा कि कोई त्रिया चरित्र हमें सुनाओ, कि हमारा जी सुने को चाहता है; तब पंडित ने उत्तर दिया, कि महाराज! मेरी तो क्या सामर्थ है जो मैं त्रिया चरित्र आप के आगे कहूं, त्रिया का चरित्र और पुरुष का भाग बिरह्मा भी नहीं जानता, आदमी की तो क्या क़ुदरत है, और यह देखे ही बन आवे, ज़बान से कहा नहीं जाता. यह बात पंडित से सुन राजा चुप हो रहा, और अपने जी में कहा, यह चरित्र देखा चाहिये * इतने में शाम हो गई, राजा उठ महल में गया, कुछ खा तुर्त ही बाहर निकल आया, और उस हरकारे को बुलाकर कहा, कि तू इस बात का ब्यौरा कुछ समझा है? उस ने जवाब दिया, कि महाराज! कुछ मेरे जी में आया है, पर आप के आगे कहते शंका होती है, राजा ने कहा कि जो तू समझा है निडर होकर बयान कर, वह बोला महाराज! उस्ने जो सिर खोल कर छाती पर हाथ रक्खा, सो उस्ने कहा जिस वक़् अंधेरी रात होगी, तब मैं तुझ से मिलूंगी, और उस्ने भी छाती पर हाथ रख जवाब दिया, कि अच्छा. दास की समझ में यह कुछ आया है. राजा ने कहा तू तो सच समझा है, यही उन का मतलब है, मैं ने भी बड़ी देर तलक घाट पर बैठ, उन्हों का मुद्दआ मअलूम

किया था, पर तू अब मेरे तईं उस के घर ले चल. हरकारे ने कहा अच्छा, महाराज! मैं हाज़िर हूं चलिये * राजा हरकारे को ले उस के मकान पास आया, और उस को बिदा किया, पिछवाड़े चौबारे के एक खिड़की थी, उस में से चिराग़ की जोति नज़र आती थी, और कभी२ जो वह झांकती थी तो उस की झलक भी मअ़लूम होती थी, जब दोपहर रात गुज़री, और ख़ूब अंधेरी होगई तब राजा ने उधर से एक कंकरी उस खिड़की में मारी, लगते ही वह झांक राजा को देख यह जाना कि वोही शख़्स आन पहुंचा, फिर उस ने तमाम घर का जवाहिर, और सब गहना एक डिब्बे में भरा, और साथ लेकर, निकल राजा के पास आई, कहा कि यह ले और मुझे लेचल. राजा ने कहा कि यों तो मैं तुझे न ले जाऊंगा, क्योंकि, तेरा ख़ाविन्द जीता है, जो कभी ख़बर पावे तो राजा के दरबार फ़रयाद को जावे, राजा तुझे मुझे मार डालेगा, इस से बिहतर यह है, कि पहले, तू उसे मार, फिर आ जो निकंटक हो हम तुम सुख भोग करें * उस ने बिलंब कुछ न किया सुनते ही घर में जा कटारी ले, ख़ाविन्द को मार फिर चली आई, और वह जवाहिर का डिब्बा राजा को दिया, दोनों इस तरह नगर से बाहर गये, आगे२ राजा, और पीछे२ वह स्त्री, जब नदी किनारे पहुंचे, तब राजा वहां खड़ा हुआ, और अपने जी में विचार करने लगा, कि जिस ने अपने स्वामी के मारने में बिलंब न किया, उस से दूसरे को क्या तवक़्क़ुअ़ होगी, अब इस से जुदा हूजिये, और इस का चरित्र देखिये, कि अब यह क्या करती है? यह दिल में विचार कर राजा ने कहा,

ऐ सुन्दरी! मैं देखूं पहले इस नदी में जल कितना है, जो मैं इस नदी की था पाऊंगा, तो इसी रस्ते तुझे भी ले चलूंगा. यह कह राजा नदी में पैठा, और पैर कर पार का रस्ता लिया, अब उस किनारे आ पहुंचा, तब पुकार कर कहा कि मैं तो पार उतर आया, पर तुझे ला नहीं सकता, क्योंकि पानी अथाह है * यह कह राजा ने आगे की राह ली, तब उस औरत ने अपने मन में विचारा, कि द्रव्य उस के हाथ लगा है, उस के लोभ से यह मुझे छोड़ गया अभी रात कुछ बाक़ी है, बिहतर है, कि फिर घर चलिये, और स्वामी के साथ जलिये. यह दिल में ठानकर अपने घर में आई और खाविंद के पास आ कूक मार२ हाय२ कर रोने लगी, और पुकारी दौड़ियो! चलियो! मेरे खाविंद को चोर मारे हुए जाता है, और घर की सब माया भी लिये जाता है, यह सुन कर घर बाहर के सब लोग दौड़े, और पूछा, कि चोर किधर है? उस ने कहा अभी२ इसी रस्ते निकल गया * लोग तो ढूंढने लगे और यह सिर पटक२ रो२ कर कहती थी, कि मेरा सुहाग लूट मुझे अनाथ किये जाता है; लोग सब कुटुंब के समझाने लगे, कि यह भगवान की माया है, इस में किसी का बस नहीं चलता, जब मौत आती है, तो कुछ बहाना लिये आती है, इस के दिन पूरे होचुके, और कौन किसी को यों मारसकता है, और कौन किसी को जिला सकता है? तू अपने जी में ढाड़स बांध, और इसकी गतिकर, तब वह बोली, कि मैं भी इस के साथ सती हूंगी, क्योंकि मेरा जगत में कोई नहीं: लोगों ने बहुतेरा समझाया पर उस ने न माना, खाविंद को ले नदी किनारे गई,

और चिता बना, उस को लेकर आप भी जलने को बैठी, तमाम नगर के लोग देखने आये, राजा भी आन खड़ा हुआ, उस ने ख़ातिर जमअ से आग अपने हाथ से चिता में लगाई और संभल बैठी * जब कपड़े, और बाल उस के जलकर बदन में आंच लगी, तब घबराकर उठी, और सब लोग देख कर हंसे, वह चिता में से कूद नदी में जा पड़ी, तब राजा से चुप न रहा गया, कहा कि ऐ सुन्दरी! यह क्या है? वह बोली, सुनो राजा! इस का मर्म जाकर अपने घर में पूछो, और मैं जो अपने कर्म में लिखा लाई थी, उसी का फल पाया, पर तू ने अपने घर का भेद न पाया. हम सात सखियां इस नगर में हैं, उन में की एक मैं हूं, और छः तेरे घर में हैं. यह कह, वह तो पानी में डूब मुई. राजा अपने महल में आया, और छिप रहा, किसी को दिखाई न दिया, एक दिन, और एक रात वहां लग रहा, दूसरी रात जब हुई, आधी रात के समैं छहों रानियां हाथों में कंचन के थाल, मिठाई पकवान से भर२ लेकर महल के पिछवाड़े की बाड़ी में गईं * उस के आगे एक बन था, उस बन में मंढी एक थी, उस में एक जोगी ध्यान लगाये बैठा था, ये छहों रानियां दंडवतें कर वहीं जा बैठियां. राजा भी जो उन के पीछे२ आया था, यह अहवाल देखने लगा, जब सिद्ध अपने ध्यान से निचंत हुआ, उन से हंस२ बातें कहने लगा, और जिस क़दर ये मिठाई पकवान ले गईं थीं सब आगे रख दिया, उन ने भोजन किया, और पान खाकर, एक जोग बिद्या की, कि एक देह की छः देह भईं, और उन छहों रानियों से भोग किया. फिर वे छहों

रानियां बिदा हो अपने मंदिर को चली आईं * राजा यह चरित्र देख, अपने मन में बिचार करने लगा, कि इस सिद्ध ने क्या किया, कि अपना जोग भ्रष्ट किया, और उन का धर्म खोया, यह बिचार कर राजा सिद्ध के सौंहीं जाकर खड़ा रहा. सिद्ध मन में कुछ संकोच, कुछ शंका लिये बोला, कि कह नृपति कहां से आया है, अपने मन का मुझ से भाव कह. तब राजा ने कहा मुझे आप के दरसन की इच्छा थी, इस लिये मैं आया हूं, तब वह जोगी बोला कि राजा! तू मुझ से जो कामना मांगे सो तेरी पूरी करूं, फिर राजा ने कहा, कि स्वामी! एक देह की छः देह किस तरह बने, वह बिद्या मैं तुम से मांगता हूं, मुझे बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें जान से मार डालता हूं * इतनी बात कह पुतली कहने लगी, कि सुन राजा भोज! जब राजा ने उस सिद्ध से ये बातें कहीं, तब उसने डर के वह बिद्या दी, और राजा ने वहां परीक्षा कर ली, तिस पीछे जोगी को तलवारें मार टुकड़े कर डाला, फिर वहां से महल में आया और जहां छहों रानियां बैठी थीं वहीं आन कर राजा भी बैठा: राजा को देख, छहों उठ ख़िदमत में हाज़िर हुईं, किसी ने पंखा हिलाया, किसी ने हाथ, मुंह धुलाया, किसी ने पान बना खिलाया, इसी तरह सब अपनी२ प्रीति राजा से प्रकाश करने लगीं, और जों२ वे प्यार करती थीं तों२ राजा मान करता था. फिर राजा बोला सुनो सुन्दरियो! मैं तुम से हित करता हूं, तुम मुझसे अनहित कर, और का ध्यान धरो, यह तुम्हें उचित नहीं. तब वे बोलीं कि महाराज! हमारे तो प्रान रक्षक तुम हो, तुम्हें देखे हम जीती हैं,

तुम्हारा ध्यान हम आठ पहर करती हैं, जो कधी बाहर कहीं तुम जाते हो, तो हम चकोर की तरह तुम्हारे मुख चंद के देखने को तरसती हैं, और जैसे जल बिन मीन तड़फे, तैसे हम व्याकुल रहती हैं, और छिन भर के बियोग में जल कंवल की तरह हम कुमहला जाती हैं * राजा सुन क्रोध कर मुसकुराया, कि सच है सुन्दरियों! हम ने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोड़ता, जैसे एक सिद्ध के छः सिद्ध होगये, और फिर वह एकही सिद्ध होगया * यह सुन रानियां एक दम चुप होकर, फिर बोलियां कि महाराज! ऐसी अचरज की बात तुम कहते हो जो कभी न देखी, न सुनी, और किसी को इअतिबार भी जिस का न आवे, क्योंकर एक देह की छः देह होंय, और इस बात को कौन मानेगा? तब राजा ने कहा कि चलो हम तुम्हें दिखा दें * छहों को अपने साथ ले उसी बाड़ी में जा उस गुफा का मुंह खोल दिया, देख कर वे सहम गईं, और अपने मन में जाना, कि राजा ने हमारा सब चरित्र देखा, फिर राजा ने कहा कि तुम ने जाना, या नहीं? यह सुन कर उन्हों ने नीची गरदनें कर, जवाब कुछ न दिया, तब राजा छहों का सिर काट, उस गुफा में डाल, मुंह बंद कर, चला आया, और आते ही नगर में ढंढोरा फेर दिया, कि जितने बिराह्मन और बिराह्मनियां और बिराह्मनों की कन्या हैं वे सब यहां आन कर हाज़िर होवें * यह सुन कर सब हाज़िर हुईं, जितने रानियों के गहने और बस्त्र थे वे सब बिराह्मनियों को पहनाये, और एक२ बिराह्मन को एक२ गांव छत्त कर दिया, और जितनी कन्या थीं उन को दान, दहेज़ दे ब्याह दिया,

और आप राज काज करने लगा * इतनी बात कह पुतली समझाने लगी, कि सुन राजा भोज! तू बड़ा पंडित है, पर इस आसन पर वह बैठेगा जो बिक्रम समान होगा." वह साम्रात भी गुज़र गई, राजा उठ कर वहां से अपने मकान में गया, रात को इसी सोच में सो रहा, दूसरे दिन सुबह को फिर सिंहासन के पास आकर खड़ा ऊआ तब *

* जैलची पच्चसवीं पुतली बोली *

"सुन राजा! एक दिन की बात, मैं तेरे आगे कहती हूं. एक भाट निपट दलिद्री ख़राब हाल था, सब पृथिवी के राजाओं के पास फिर आया था, और एक कौड़ी का किसी से उसने फ़ायद: न पाया था, जब अपने घर में आया, तो देखा, कि बेटी जवान ब्याहने के लायक़ ऊई है, यह अपने जी में चिंताही करता था, कि उसकी भाटन बोल उठी, तमाम देस तुम फिर आये, पर जो कमाई कर लाये, सो कहो; तब उसने जवाब दिया कि मेरी प्रालबध में धन नहीं है, इस लिये, कि तमाम राजाओं के पास मैं गया, और शिष्टाचार उन्हों ने सब किया, पर एक दाम न हाथ आया, अब मेरे जी में एक बात आई है, राजा बीरबिक्रमाजीत बाक़ी रह गया है, उसके पास भी जाकर मांगूं, जो मेरे जी का संदेह मिटे. फिर वह भाटन बोली, अब तुम कहीं मत जाओ, और संतोष कर रहो, कर्म का लिखा फल यहीं बैठे पाओगे. फिर भाट ने कहा, कि

राजा बीर बिक्रमाजीत सुनते हैं बड़ा दानी है, उसके पास अपनी कामना जो ले गया है, वह ख़ाली हाथ नहीं फिरा, और अपने मक़सद को पहुंचा है * ये बातें कर वह राजा के पास चला, और गनेश को मना राजा के सनमुख जा खड़ा रहा, राजा ने दंडवत की, और वह असीस देकर बोला कि बहुत भूमि फिर आया हूं, आप का जस मुझे यहां ले आया है, आप इस मर्त्य लोक में इंद्र का औतार हैं और गुन के निधान हैं, आप के बराबर दानी संसार में कोई नहीं, इस समैं में आप दान देने को राजा हरिचंद हैं, तमाम पृथिवी में आप ही का जस छा रहा है, और स्वामी मैं कालिका सुत हूं, भाटवंस में आन कर औतार लिया है, अब तुम्हें जाचने आया हूं, मेरा मनोरथ पूरन कर दो, मैं ने संसार में फिर कर ख़ूब देखा, कि सिवाय तुम्हारे मेरी आस का पुजाने वाला और कोई नहीं * तब हंस कर राजा ने कहा, कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश कर के कह, जो मैं तेरी कामना पूरी करूं. भाट ने कहा यों मुझे अपने कर्म्म का भरोसा नहीं, आप बचन दीजिये तो मैं ख़ातिर जमअ़ से कहूं, जब राजा बचन देने लगा तब भाट बोला कि महाराज! मुझे मुंह मांगा दान दीजिये, कि अपनी पुत्री की शादी कर दूं, बारह बरस की कन्या मेरे घर में बैठी है, इस लिये मैं जाचने आया हूं * यह सुन राजा ने हंस कर मंत्री से कहा कि जो यह मांगे वह इसे दो, फिर उस भाट ने कहा कि महाराज! जो कुछ आप को देना है सो अपने सनमुख मंगा कर दीजिये, मुझे इस संसार में अब किसी का इअ़तिबार नहीं, राजा ने दस लाख रुपये रोक, और हीरे,

लअ़ल, मोती, सोने, रुपे, के गहने थाल, भर२ कर दिये, और वह ले असीस दे, अपने घर में आया. जो कुछ लाया था सब व्याह में लगाया, और राजा ने पीछे उस के दो जासूस कर दिये थे, कि तुम देखो, कि यह धन को ले जाकर क्या करता है? उस की ख़बर ठीक मुझे लाकर दो. जब वह शादी कर चुका, और उस के पास एक दिन के खाने को भी न रहा, तब उन हरकारों ने जाकर राजा को ख़बर दी, कि महाराज! उस भाट ने ऐसा बिवाह बेटी का किया कि इस कलियुग में कोई और कर सकता नहीं, जो कुछ आप के यहां से धन, दौलत लेगया था, सो सब छिन भर में बेटी को दे, व्याह दिया. यह सुन, राजा ने और कई लाख रुपये उस के घर भेज दिये, और अपने चित में बहुत प्रसन्न हुआ, कि धन्य भाग मेरे हैं, जो मेरे राज में ऐसे हिम्मत वाले लोग हैं" * इतनी बात कह पुतली बोली, "सुन राजा भोज! इतना धन देकर भी राजा ने उस का ख़रच सुन, और दौलत भेज दी, ऐसा दानी तू हो तो इस सिंहासन पर बैठ, और नहीं तो मन के लड्डू खाने से कुछ हासिल नहीं है."

59

यह सुन कर राजा अपने मकान में आया, फिर सुबह हुई, स्नान पूजा, कर वहीं आन चुपका खड़ा हुआ, इतने में *

* बिद्यावती छब्बीसवीं पुतली *

बोली कि, "सुन राजा! मैं तेरे आगे ज्ञान की बात कहती हूं, और तू मन देकर कान रख, जब आदमी जन्मता है, तो कुछ संग

नहीं लाता, और मरता है तो कुछ नहीं ले जाता, इस जीतब का फल यही है, कि संसार में आकर कुछ करनी करे, और जैसी करनी करेगा वैसाही फल पावेगा, और संसार में जीवन थोड़ा है, इस से ऐसा यत्न करो कि जाने पर भी जग में नाम ठहर रहे, दोनों लोक में सुख पावे, और यह मनुष्य जन्म बार२ नहीं पाता, जब पूर्व जन्म, दान, ब्रत, तपस्या बहुत कर आता है तो यह नर देह पाता है, और लक्ष्मी दान कर कुछ सोच मत कर, यही अपने जी में सदा रख, कि दान हमेश: किया कीजिये, यह भय रूप जो संसार सागर है, इस के तरने को सिवाय दान, उपकार, और हरि भजन चौथा उपाय नहीं * मैं ने तुझ से कहा, कि साथ कोई कुछ नहीं लेजाता, मैं तेरे आगे सब कहती हूं, कि राजा हरिचंद, राजा करन, राजा बीरबिक्रमाजीत क्या ले गये? और जिन्होंने दान उपकार हरि भजन किया उन का जग में नाम रहा, और अंत समैं बैकुंठ पाया" * ये बातें सुन पुतली की राजा भोज बोला, "कि राजा बीरबिक्रमाजीत ने क्या किया है? वह कह, तब बिद्यावती पुतली बोली, कि एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत राज सभा में बैठा था, एक दासी ने आकर अरज़ की, कि महाराज! उठिये पूजा का समां जाता है, यह सुन कर राजा ने बिचारा, कि इस ने सच कहा, मेरी उमर चली जाती है, और मुझ से ज्ञान, धर्म, पूजा, बन नहीं आई, इस से उत्तम यह है, कि इस राज काज की माया भुलाय, अब जोग कमाइये, जो कि और जन्म में काम आवे, यह राजा ने अपने जी में बिचारा, और राज, पाट, धन, जन, मिथ्या समझ कर तपस्या

करने को एक बन में चला, और यह बिचार करता जाता था, कि इस संसार में जीना सबेरे की ओस समान है, और जीने के भरोसे पर मैं ने अपना काम अकारथ गंवाया * यह बिचार करता ऊआ, राजा एक महाबन में जा पऊंचा, वहां जाकर देखे तो एक मंडली तपसियों की बैठी ऊई है, धूनी एक२ के आगे जाग रही है, आसन मार२ अपने२ ध्यान में लीन हो रहे हैं, कोई ऊर्द्धबाऊ, कोई पंचाग्नि, इस रीति अनेक२ प्रकार की साधना कर रहे हैं, और कोई२ उन में बैठा शरीर से मास काट२ होम कर रहा है * इस तरह से उन की तपस्या देख राजा भी तप करने लगा * आप भी तपस्या करता था, और उन की भी तपस्या देखता था, कई एक दिन में तपसियों ने अपना शरीर सब होम में दिया, उन की देखा देखी, राजा भी अपना शरीर होम में लगा, कई महीनों में राजा ने एक दिन सिर भी अपना काट होम में दिया. वहां जो एक शिव का मंदिर था, उस में से एक शिव गन निकला, और निकल कर सब तपसियों की धूनी में से राख समेट कर, जुदी२ ढेरी की, और फिर जा शिव को खबर दी, कि महाराज! जो आप ने कहा था सो मैं कर आया * तब शिव ने आज्ञा की, कि यह अमृत तू लेजा, और उन के ऊपर छिड़क आ. यह आज्ञा पाय, अमृत लाय, जों२ छिड़कता था तों२ उन में से एक२ शिव२ राम२ कह२ उठ खड़ा रहता था, सब पर तो उन ने छिड़क दिया, पर राजा की धूनी भूल गया, और सब तपसी मिल कर शिव की स्तुति करने लगे, कि महाराज! आप भक्तराज हैं और अनाथ के नाथ * जिस्ने आप का स्मरन किया,

निस का तभी तुम ने फल दिया, और जहां२ सेवकों को संकट ऊआ है तहां२ उन के सहाय ऊये हो * यह स्तुति करके उन तपस्वियों ने कहा, महाराज! एक नृपति भी हमारे साथ तपस्या करता था, पर मअ़लूम नहीं, कि उस को आप की आज्ञा ऊई कि नहीं? * यह सुन महादेव ने उस गन की तरफ़ देखा, देखते ही उसे अम्रत ले आकर जो धूनी बाकी रही थी, उस पर छिड़का, राजा भी हरी हर कहता उठ खड़ा ऊआ, और हाथ जोड़ स्तुति करने लगा, कि महाराज! संसार के सब जीवों की आप सहाय करते हैं, और पालते हैं, आप बिना इस संसार सागर से कौन पार उतारे, जिस ने जग में आ, आप को नहीं पहचाना, उस ने अपना जन्म निर्फल खोया * फिर जितने तपसी वहां थे, शिव ने उन को मुंह मांगा बर दिया, और सब को बिदा किया, सब के पीछे जब राजा अकेला रह गया, तब उसे कहा जो तेरी इच्छा में आवे, सो तू बर मांग, मैं तुझे दूंगा; यह सुन राजा ने कहा महाराज! आप की दया से सब कुछ है, पर एक यह मांगता हूं, कि संसार के जनम मरन से मेरा निबेड़ा करो, जैसे और भक्तों का निबेड़ा किया, तैसे मुझ से परम पापी, अधीन, दीन, हीन को तारो. यह राजा की बिनती सुन, दया कर, शिव ने हंस कर कहा, कि तेरे समान सुकर्मी कोई कलि में नहीं, और तू ज्ञानी, जोगी, दाता, साहसी, तपसी है कलि के राजाओं का उद्धार करने वाला है, और मैं तुझ से कहता हूं, कि अब जाकर तू अपना राज कर, जब तेरा काल निकट आवेगा, तब तू मेरे पास आइयो, यह मैं ने तुझे बचन दिया, कि अंत समैं में मैं तुझे अक्षय पद दूंगा,

इस से तू अब जाकर मर्त्य लोक में आनंद से राज कर * फिर राजा करुणा कर के बोला कि महाराज! संसार से तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहीं जाते, या तो मुझे इस समैं तारो, नहीं तो मैं अपना जी देता हूं; तब हंस कर शंकर ने कहा जो तू जी देगा तो मृत्यु बिना जम तुझे हाथ से भी न छुएगा, और फिर आर्बल के दिन भरने पड़ेंगे, इस से तू जा, उठ, मेरा बचन जी में रख * इतना कह शिव तो कैलाश को गये, और राजा के हाथ में कंवल का फूल दे, यह कह गये, कि जब यह कंवल मुर्झायगा, तब तू जानियो छः महीने में मैं मरूंगा. फूल ले राजा अपने नगर को आया, और अपने मन का बिचार किसी से न कहा, कितने एक बरस पीछे वह कंवल का फूल मुर्झागया, तब राजा ने जाना कि मैं छः महीने में मरूंगा, जितना कुछ धन, और दौलत थी, सो बिराह्मनों को संकल्प कर दी, स्त्री, और पुत्र के खाने को कुछ धन दिया, बाक़ी सब पृथवी बिराह्मनों को दान कर दी इस तरह दान, पुन्य, कर राजा सदेह कैलाश को चला गया" * इतनी बात, कह पुतली बोली, "सुन राजा भोज! बिक्रमाजीत ने इतना काम किया, और जीवन, मरन दोनों चीन्हे, इस से मैं तुझे कहती हूं, कि जीने का कुछ भरोसा नहीं, और मरन उसके साथ लग रहा है, दुख, सुख भी मनुष्य के शरीर के साथ हैं, और पाप, पुन्य भी साथ रहते हैं निरगुन और सरगुन ज्ञान भी घट में रहता है, पर एक बिरह्म ही अलख है, इस से मैं तुझे कहती हूं, भूपाल! कि संसार में कृति की कीर्ति रह जाती है सोई अमर है, जो मैं ने तुझे कहा मन बच कर्म कर, सच तू जान" * वह दिन तो

यों गुज़र गया, राजा नाउम्मेद हो, अपने मकान को फिर गया, सुबह होते ही, हाथ, मुंह धो, स्नान, पूजा कर फिर वहीं आन मौजूद हुआ, जितने राजा की सभा के लोग थे, वे भी सब हाज़िर हुए, राजा ने अपने लोगों से कहा, कि, ये पुतलियां बातें झूठ बना२ मेरे आगे कहती हैं, अब मैं इन की बातें न सुनूंगा और इस सिंहासन पर बैठूंगा, वह यह अपने लोगों से बातें करता था कि *

* जगजोती सत्ताईसवीं पुतली *

बोली, "सुन राजा भोज! एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत अपनी सभा में बैठा था, कि कोई प्रसंग निकला इस में कोई बोल उठा, कि आज राजा इंद्र के बराबर कोई राजा नहीं है, क्योंकि, वह देव लोक का राज करता है. यह बात राजा ने सुन किसी से कुछ न कहा, और बैतालों को बुला कर कहा, मुझे इंद्र पुरी को ले चलो, बैताल तुर्त ले उड़े, और एक दम में लेजा कर इंद्र की सभा में पहुंचा दिया. राजा ने जातेही वहां इंद्र को दंडवत की, और हाथ जोड़ खड़ा हुआ, तब इंद्र ने बैठने को आज्ञा दी, यह हुकम पाकर बैठ गया; इंद्र ने कहा, कहां से तुम आये हो, और नाम तुम्हारा क्या है, देश तुम्हारा कौनसा है, किस अर्थ को यहां आये हो? सो तुम कहो, राजा बोला कि स्वामी! अंबावती नगरी का राजा हूं मैं बिक्रम, आप के पद पंकज के दरसन के अर्थ आया हूं, तब प्रसन्न हो इंद्र बोला, कि हम ने भी तुम्हारा नाम सुना था,

और मिलने की इच्छा थी, सो तुम ने आज यहां उलटी रीत की, अब जो कुछ तुम्हारा मनोरथ हो, सो हम से कहो, और जो तुम्हें चाहिये सो मांगो हम तुम्हें देंगे. तब राजा ने कहा स्वामी! आप की कृपा, और धर्म से सब कुछ है, और जो कुछ न हो तो मैं आप से मांगूं, आप का दिया ऊआ सब कुछ मेरे पास है, राजा की ये बातें सुन कर इंद्र ने प्रसन्न हो, अपना मुकट, और एक बिमान दे यह असीस दी, कि जो तेरे सिंहासन को बुरी दृष्टि से देखेगा, वह तुर्त अंधा होगा * राजा वहां से बिदा हो, फिर अपने नगर में आया, और नगर में बधाई बजने लगी * इतनी बात पुतली से सुन कर राजा भोज, सिंहासन पर हाथ धर कर एक अपने पांव को रख खड़ा ऊआ, और चाहा कि आसन मार गद्दी पर जा बैठूं, इतने में आंख से अंधा हो गया, और दीवानी२ बातें करने लगा, चाहता था कि हाथ उस पर से उठावे, जुदा न होता था, यह हाल देख पुतलियां खिल खिलाकर हंसी, और सब सभा भैचक होगई, अपने जी में सब लोग कहने लगे, कि राजा ने यह क्या अज्ञानपन किया, कि बिना बात सुने सिंहासन पर पांव दिया! यह अपनी दसा देख राजा भोज बऊत पछताकर लज्जित ऊआ, तब पुतली बोली, कि ऐ मूर्ख! तू ने हमारी बात न सुन कर क्या फल पाया? और अब तू ऐसा ही रह. यह सुन हिरासा हो बोला, कि इस का यतन कुछ तुम बताओ, तब पुतली बोली कि राजा बिक्रम का नाम ले, तब तू इस दुख से छूटेगा. जब बिक्रम का यश राजा भोज ने बयान किया, तब हाथ छूट गया, और आंख से भी सूझने लगा,

फिर नीचे उतर खड़ा हुआ * यह देख कर सब लोग भयमान हुए, और राजा भी अपने चित में डरा, सभा के सब लोग बोले, कि राजा बिक्रम के समान होना इस कलि में कठिन है, फिर पुतली बोली, कि राजा! इसी वास्ते मैं ने कहा था और तू मेरी बात झूठ मत मान, तू मूर्ख है, कुछ भी तुझे ज्ञान नहीं, जो तू विद्या पढ़ा है इस से कुछ होता नहीं, ज्ञान और ही चीज़ है, अपने बराबर राजा बीरबिक्रमाजीत को मत समझ, वह देवताओं के समान था, और उस के बराबर ज्ञान, ध्यान, तेरा नहीं, अपने जी से आस छोड़, यह सिंहासन तुझे नहीं साजेगा, और संसार में बहुत बातें हैं वह कर जिस से संसार में तेरा राज स्थिर हो, प्रताप बढ़े, कीर्त्ति रहे" * वह दिन भी ग़रज़ इन्हीं बातों में गुज़र गया, फिर अपने महल में गया रात को जों तों काट सुबह फिर उसी मकान पर आन खड़ा हुआ तब *

* मनमोहनी अट्ठाईसवीं पुतली *

बोली कि, "सुन राजा भोज! राजा बीरबिक्रमाजीत के समान बली, साहसी, ज्ञानी, कलि में दूसरा जो कोई हुआ हो, तो मुझे बता दे, और जो मैं कहती हूं, सो सच कर जान. एक दिन मैं ने राजा बीरबिक्रमाजीत से हंस कर कहा, कि स्वामी! पाताल में राजा बलि बड़ा राजा है, कि जिस के दास समान भी तू नहीं हो सकता है, और जो अपना राज तू स्थिर किया चाहे, तो एक बार राजा

बलि के पास तू हो आ. यह बात सुनते ही बैतालों को बुला, आज्ञा दी, कि पाताल पुरी में मुझे राजा बलि के पास ले चलो, सुनतेही बैताल तुर्त ले उड़े, और दम भर में पहुंचा दिया, राजा वह नगर देख, भैचक हो रहा, और अपने मन में कहने लगा, कि ऐसा नगर कहीं आज तक नहीं देखा, मानिंद कैलाश के हो रहा है, धन्य राजा बलि को, जो इस नगर का राज करता है * इस तरह से नगर देखता हुआ, राजा की सिंह पौर पर आ खड़ा हुआ, और हाथ जोड़, बिनती कर, द्वारपालों से कहने लगा, अपने राजा को मेरे आने का समाचार कहो, कि महाराज! मर्त्य लोक से राजा बिक्रम आप के दरसन को आया है, यह सुन डिउढ़ी दार ने अपने राजा के पास जा बिक्रम की ख़बर दी, सुन कर राजा बलि ने कहा, ग़र को मैं अपना मुख न दिखाऊंगा, यह सुन कर दरबान ने आ राजा से कहा, कि तुम्हें दर्सन न होगा, राजा बिक्रम बोला, कि जब तलक दर्सन न पाऊंगा, तब तलक यहां से मन न डुलाऊंगा * यह बात जाकर दरबान ने राजा बलि से कही, तब उस ने कहा, कि बिक्रम तो कौन है जो राजा इंद्र भी आवे तोभी मैं अपना दर्सन न दूं. फिर कई दिन के बाद एक दिन राजा ने दुख पाय के अपना सिर काट डाला, कि तमाम सभा में रौला मचा, कि बड़ा अयुक्त काम इस प्राणी ने किया, राजा ने बात सुन दंग कर आज्ञा दी, कि अमृत लेजाकर उसे जिलाओ, और कहो, कि तुझे दर्सन होगा, तू अपने जी में न घबरा, इस वक़्त तू जा, और अपना राज काज कर, और जब शिवरात्रि आवेगी, तब तू आइओ,

तुझे दर्शन मिलेगा॰ यह सुन एक हाथ राजा का अमृत लेगया, और राजा वीरविक्रमाजीत पर छिड़क कर जिलाया, अब राजा सावधान हुआ, उठ बैठा, तब उस ने राजा बलि का संदेसा सब कहा. सुन कर बिक्रम बोला कि तुम यह बात कह कर मुझे क्यों बहकाते हो, मैं तुम्हारी नहीं मानने का, इस से उत्तम यह है, कि तुरंत महाराज का दर्शन करूं. यह सुन लोगों ने राजा के पास आकर कहा, कि महाराज! वह नहीं मानता और आता नहीं, अब इस जवाब, श्रो सुवाल को कुछ देर हुई, तब फिर राजा बिक्रमाजीत ने अपना सिर काट डाला, द्वारपाल ने राजा से कहा, कि महाराज फिर उस मनुष्य ने आत्मघात किया, राजा ने फिर अमृत भेज दिया और कहा कि उसे जिला, समझा कर उस के नगर को पठा दो. एक दूत ने आकर राजा पर अमृत छिड़क जिलाया, और कहा कि तू अपने जी में ढाढ़स रख, अब तुझे तुर्त दर्शन होगा और जितने राजा की सभा के लोग थे, उन्हों ने एक मता कर राजा से कहा, कि महाराज बिक्रम की आस को निरास मत करो, क्योंकि, इस ने बड़ा साहस किया है, उन की बातें सुन राजा बलि उठ कर द्वार पर आया, और बिक्रम ने दर्शन पाया, और दंडवत कर, हाथ जोड़, कहा कि महाराज! धन्य हैं भाग मेरे, जो मैं ने आज आप का दर्शन पाया, और जन्म२ का दुख गंवाया. फिर कहने लगा, कि महाराज! क्या मेरा अपराध था जो आप मुझे दर्शन न देते थे, क्या मैं साहसी नहीं हूं, या मैं दानी नहीं हूं, या मुझे लोक के लोग नहीं जानते, यह कौनसा पाप था, जो मेरे द्वारे आने से आप ने बुरा

आया? तब राजा बलि बोला, कि सुन बिक्रम! कुलनायक तेरे समान और कोई नहीं, अब कान देकर सुन, कि मैं तेरे आगे इस का ब्योरा कहता हूं * पहले राजा हरिचंद बड़ा दानी, बड़ा साहसी, हो गया है, और एक राजा जगदेव भी बड़ा दानी, और बड़ा प्रतापी हो गया है, उन्होंने बड़ा दान और साहस किया था, पर तेरा सा जो उन का न था, और उन्होंने भी मेरे दर्शन की बक्त अभिलाषा की थी, पर दर्शन मैं ने किसी को न दिया, तू एक द्वीप का राजा किस गिनती में है, पर तेरी तपस्या बड़ी ज़ोरावर है, जो तुझे दर्शन मिला * राजा बिक्रम ने फिर हाथ जोड़ कहा महाराज! जो आप ने कहा सब सच है, और मैं ने निश्चय कर अपने जी में माना, कि आप ने मुझ पर बड़ी कृपा कर दर्सन दिया, और दया कर भवसागर से पार किया, फिर राजा बलि ने कहा कि राजा! तू अब बिदा हो, और जाकर अपना राज काज कर, बिदा का नाम बिक्रम ने सुन कर बड़ा खेद किया, इतने में राजा बलि ने एक लअल मंगा बिक्रम को प्रसाद दिया, और उसका गुन बताया, जो तू इस से मांगेगा, यह सब देगा, बिक्रम ने हाथ जोड़ कर लिया और दंडवतकर बिदा हो, बैताल पर सवार हो, अपने नगर को आया. जब नगर के निकट आनकर पक्तंचा, नदी के किनारे२ देखे तो एक स्त्री का खाविंद मरगया है, उसे जला कर खड़ी क्तई वह डकरा२ रोती है, और कहती है कि अब इस संसार में मेरा मालिक कोई नहीं, और न मेरे पास माया है, किस तरह मैं तेरा श्राद्ध करूंगी, और पंचों से सुरखरू हूंगी, इसे कह२ कूक मार२ रोना, राजा ने

सुना, और देखकर वह रत्न उस स्त्री को दिया, और कहा जो तू इस से मांगेगी सो तेरी यह आस पुजावेगा, उस को ले वह नारी नगर में गई, और राजा भी अपने महल में आ दाखिल ऊआ" * इतनी बात कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज, ये गुन बिक्रम में थे, ऐसा साहसी था, और प्रजा का हितकारी, जो तू सात स्वर्ग फिर आवेगा तो भी उस के समान न होसकेगा, इस से तू अपने मन के खियाल से बाज़ आ, और जो राजा ने काम किये हैं सो भी तुझ से कहूंगी." वह भी दिन इस तरह से टलगया उस के सुबह राजा दीवान को साथ ले सिंहासन के पास फिर आन खड़ा ऊआ तब *

* वैदेही उनतीसवीं पुतली *

बोली "राजा भोज़! तू किस बात पर भूला है, सब सखियों ने तुझे कथा सुनाई तब भी तू पत्थर न पसीजा; पहले मुझ से बात सुन ले पीछे सिंहासन पर पांव दे." राजा ने कहा अच्छा कह, पुतली बोली, "एक दिन राजा बीरबिक्रमाजीत रात को अपने मंदिर में सोता था, कि एक ख़ाब देखा, वह मैं तेरे आगे कहती हूं. क्या देखता है? कि एक सोने का महल है, और उस में अनेक२ प्रकार के रत्न जड़े हैं, और तरह ब तरह के पाक पकवान और सुगंधें धरी ऊई हैं, और एक तरफ़ एक अच्छी फूलों की सेज बिछी ऊई है, एक तरफ़ फूलों के गहने संगेरों में भरे ऊए, अतर दान, पान दान, गुलाब पाशें, भरी धरी हैं, और मकान के चारों ओर फुलवारी

खिली ऊई है; बाहर उस मकान की भीतों पर रंग ब रंग के चित्र बने ऊए, कि जिन के देखे से तुर्त आदमी मोहित हो, और उस मंदिर के भीतर खूब सूरत स्त्रियां अच्छे साज़ मिलाये मीठे२ मधुर२ सुरों से बैठी गाती हैं, और एक तपसी बैठा ऊआ राग सुनता है. यह देख राजा ने अपने जी में कहा, कि यह तपसी इन नारियों के योग नहीं है * इतने में आंख खुल गई, और सुबह ऊई तब स्नान, ध्यान, पूजा कर बीरों को बुलाकर कहा, कि मैंने जिस जगह को सपने में देखा है, तुम मुझे वहां ले चलो. राजा की बात सुनते ही बीर उठाकर ले उड़े और पल मारते वहां पऊंचाया. राजा ने वहां से बीरों को रुखसत किया और आप उस बागचे में गया और उस मकान की तैयारी देखते ही भैचक हो, अपने मन में कहने लगा, कि यह मकान किसने बनाया है, आदमी का तो मक़दूर नहीं, चाहिये तो बिरह्मा ने अपने हाथ से चित दे पच के रचा है. फिर उस मंदिर के अंदर जा, राजा खड़ा ऊआ * इतने में वहां जो रंडियां बैठी गाय रहीं थीं, सो राजा को देख अपने मन में डर चुप हो रहीं, और उस सिद्ध का स्मरन किया, उस ने तुर्त आके दर्सन दिया, और वह बिक्रम को देख क्रोध कर बोला, कि अभी श्राप तुझे देता हूं, कि तू जल कर भस्म हो जाता है, किस लिये मेरे स्थान पर आया है, सुख से ये स्त्रियां बैठी राग अलाप रहीं थीं, तू ने आकर क्यों भंग किया? यह सुन राजा हाथ जोड़, बिनती कर, बोला कि महाराज! मैं अनजान यहां आया हूं, तुम्हारे दर्सन की मुझे इच्छा थी. तुम्हारे क्रोध की आंच को कौन सह सकता

है, मैं आप का दास हूं, चूक मेरी मुआफ़ कीजिये. यह सुन, वह जोगी बोला कि सुन बिक्रम! तू ने सच कहा मुझे बड़ा क्रोध हुआ था, पर जो तू मेरे सनमुख न होता तो मैं तुझे श्राप देता, और अब मैं तेरी बात सुन प्रसन्न हुआ, तू मुझ से मांग जो चाहिये * राजा ने कहा कि महाराज! मैं क्या मांगूं, आप के प्रसाद से मेरे यहां सब कुछ है, अन, धन, रतन, हाथी, घोड़े, किसी चीज़ की कमी नहीं. पर एक बस्तु मांगने के लिये मैं आप के पास आया हूं, जो कृपा कर दीजिये तो मैं मांगूं. यह सुन जोगी ने कहा राजा जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा. राजा ने कहा यह मंदिर मुझे दीजिये. जोगी ने सुन बिलंब न किया, तुर्त वह मंदिर राजा को दिया, और अपना जोग रूप धर वहां से तीर्थ बरत करने को गया * राजा ने जब वह महल पाया, तब प्रसन्न हो गद्दी पर जा बैठा, और वे सब रंडियां जैसे जोगी के आगे गातियां थीं गाने लगीं, राजा उस मंदिर में खुशी से रहने लगा, अनेक२ प्रकार के रसभोग करने लगा * इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज राजा बिक्रम तो वहां बैठकर आनंद करने लगा, और जोगी तीर्थ२ फिरता था, और जो कोई सिद्ध वहां मिलता था उस से अपना दुख कहताथा. इस तरह से किसी और तीर्थ में जा पहुंचा, और वहां एक जती से अपने जी के दुख का ब्यौरा सब कहा * उन्ने उसे कहा कि तू अपने स्थान को जा, और भेष धर के राजा से जा सुवाल कर वह धरमात्मा है, अभी तू वह मकान मांगेगा तभी तुझे हवाले करदेगा. यह उस की सीख मान एक बूढ़े बिराह्मन का भेष धर, उस मंदिर के निकट आया.

द्वार पर आ ताली दी, ताली की आवाज़ सुनतेही राजा बाहर निकल आया, और उसे कहा कि तू क्या मांगता है? मांग, मैं तुझे दूंगा, तब उस ने कहा महाराज! मैं तमाम पृथिवी फिर आया पर अपनी इच्छा का स्थान कहीं न पाया, कि जहां मैं बैठूं. यह सुन राजा हंस के बोला कि यह ठांव तुम्हारी इच्छा के मुवाफ़िक़ हो तो लो, यह सुन बिराह्मन ने असीस दी, राजा उसे उस जगह पर बिठा, अपने घर को आया" * इतनी बात कह पुतली बोली, "सुन राजा भोज! तू उस के सिंहासन पर बैठने जोग नहीं है, तू अपने जी में नहीं बिचारता जो बिना समझे ऐसा इरादः करता है. जो उस की बराबर हो वह इस सिंहासन पर बैठे." वह रोज़ भी यों आख़िर हुआ, अचता पचता अपने मंदिर में गया, रात तो जों तों कटगई, सुबह हुए स्नान, पूजा कर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ, और सिंहासन पर चाहे कि पांव धरे *

* रूपवती तीसवीं पुतली *

बोली, "कि सुन राजा! बावले, अज्ञानी, ऐसा पुरुषार्थ तू ने कब किया जो सिंहासन पर बैठने को आया है, एक दिन की बात राजा बीरबिक्रमाजीत की मैं तुझे कहती हूं, तू सुन, कि अपने महल में एक रात को राजा आराम से सोता था, इस में कुछ राजा के जी में आया, एक बारी उठ कर, काछा बांध, ढाल तलवार ले, शहर के कूचों में फिरने लगा. आगे जाकर देखे तो चार चोर